mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-28 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

29 जनवरी 2025 बुधवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

नागल शीर्ष 100 से...
@ पेज 7

महाकुंभ जा रही रही फ्लाइट का 5000 का टिकट 50 हजार में क्यों?

प्रयागराज (एजेंसी)। 148 साल बाद लगे प्रयागराज महाकुंभ में अभी तक 17 दिनों में कुल 15 करोड़ श्रद्धालु संगम में आस्था की डुबकी लगा चुके है। वहीं, 29 जनवरी को मौनी

● आम आदमी पार्टी के सांसद राघव चड्ढा ने नाराजगी जताई

अमावस्या के दिन प्रयागराज महाकुंभ 2025 के दूसरे अमृत स्नान से पहले महाकुंभ मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है। जिन लोगों को बस और ट्रेन में टिकट नहीं मिल रहा है, वे लोग संगम में डुबकी लगाने के लिए फ्लाइट से प्रयागराज पहुंच रहे हैं। दिल्ली और मुंबई से प्रयागराज जाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या में लगातार इजाफा हो रहा है, ऐसे में एयरलाइन कंपनियों ने दिल्ली और मुंबई से प्रयागराज जाने वाली फ्लाइट्स के किराये में कई गुना बढ़ोतरी कर दी है।

श्रद्धालुओं की आस्था का मजाक: आम आदमी पार्टी के सांसद राघव चड्ढा ने महाकुंभ मेले के दौरान फ्लाइट कंपनियों की तरफ से किरायों में हो रही बेतहाशा बढ़ोतरी को लेकर नाराजगी जताई है। उन्होंने इसे श्रद्धालुओं की आस्था का मजाक बताया, साथ ही किराया कम करने की अपील भी की है। सांसद राघव चड्ढा के मुताबिक, महाकुंभ, सनातन धर्म के अनुयायियों के लिए आस्था और अध्यात्म का सबसे बड़ा पर्व है। इस दुर्लभ संयोग में, जब 144 वर्षों के बाद महाकुंभ का आयोजन प्रयागराज में हो रहा है, लाखों-करोड़ों श्रद्धालु स्नान, साधना और तपस्या के लिए देश और विदेश से तीर्थराज प्रयागराज पहुंचने की इच्छा रखते हैं। लेकिन ये फ्लाइट कंपनियां इस पवित्र आयोजन को अनुचित लाभ कमाने का अवसर मान रही हैं।

सामान्य किराया 5000-8000 से बढ़कर 50000-60000 तक पहुंचा: राघव चड्ढा ने कहा, फ्लाइट कंपनियों की मनमानी और मुनाफाखोरी ने श्रद्धालुओं की परेशानियां बढ़ा दी हैं। उन्होंने फ्लाइट्स के सामान्य किराए में बढ़ोतरी पर कहा कि जो टिकट पहले 5000-8000 रुपये का मिलता था, अब उसकी कीमत 50000-60000 रुपये तक पहुंच गई है।

निराश हो रहे श्रद्धालु: आप सांसद ने कहा कि लाखों श्रद्धालु जो कुंभ जाना चाहते हैं, उनको यादा किराए की वजह से निराश होना पड़ रहा है। यह कंपनियां अपने फायदे के चक्कर में श्रद्धालुओं के साथ ठीक नहीं कर रही हैं। उन्होंने श्रद्धालुओं की तरफ से किराया कम करने की अपील की। साथ ही राघव चड्ढा ने इसके पहले एयरपोर्ट पर महंगे खाने को लेकर उठाए गए मुद्दे को याद किया। इस पर उन्होंने कहा कि सस्ते खाने को लेकर हमारी आवाज सरकार तक पहुंची थी। जिसके बाद सरकार ने यात्रियों के लिए किफायती कैंटीन की शुरुआत की।

संक्षिप्त समाचार

भूकंप के झटके से सहमे यहां के लोग

तिब्बत (एजेंसी)। तिब्बत में भूकंप के झटके महसूस किए गए। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के एक बयान में कहा गया है कि तिब्बत में रिक्टर स्केल पर 4.5 तीव्रता का भूकंप आया। सोमवार को यह भूकंप 29.10 एन अक्षांश और 87.66 ई देशांतर पर 5 किमी की गहराई पर आया था। हालांकि भूकंप से किसी जान-माल के नुकसान की खबर नहीं है। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी

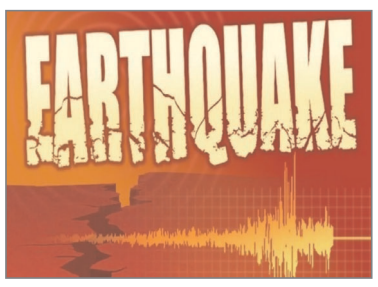

के अनुसार, तिब्बत में 22 जनवरी को भी रिक्टर स्केल पर 4.2 तीव्रता का भूकंप आया था। वहीं, 21 जनवरी की सुबह भी तिब्बत में भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। दोनों भूकंप जमीन से 10 किमी की गहराई पर आए थे। इस भूकंप से भी किसी की मौत नहीं हुई थी। हालांकि बार-बार भूकंप आने से यहां के लोगों की टेंशन जरूर बढ़ गई है। इस तरह के भूकंप आमतौर पर गहरे भूकंपों की तुलना में अधिक खतरनाक होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उथले भूकंप सतह के करीब अधिक ऊर्जा छोड़ते हैं, जिससे अधिक तीव्र कंपन और क्षति होती है। यह क्षेत्र हाल ही में भूकंप और झटकों से त्रस्त रहा है, 24 जनवरी को इस क्षेत्र में 4.4 तीव्रता का एक और भूकंप आया था। इससे पहले तिब्बतके शिगाजे के डिंगरी काउंटी में भी 13 जनवरी को भूकंप आया था। स्थानीय समयानुसार रात 8:58 बजे पवित्र शहर शिगाज़े के आसपास के क्षेत्र में भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। भूकंप का केंद्र 10 किलोमीटर की गहराई पर था। इसी क्षेत्र में आठ जनवरी को 6.8 तीव्रता का भूकंप आया था जिसमें 126 लोग मारे गए थे।

पाकिस्तान में छिन जाएगी लोगों की आजादी!

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान की संसद के ऊपरी सदन ने मंगलवार को एक विवादास्पद विधेयक पारित कर दिया है। इस विधेयक को लेकर आलोचकों का कहना है कि इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को दबाने के लिए बनाया गया है। इलेक्ट्रॉनिक अपराध निवारण (संशोधन) विधेयक 2025 या पेका कानून को उद्योग और उत्पादन मंत्री राणा तनवीर हुसैन ने पेश किया। विधेयक सरकार को गलत सूचना फैलाने के लिए सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं पर भारी जुर्माना लगाने और उन्हें जेल भेजने के व्यापक अधिकार प्रदान करता है।

मंगलवार को सीनेट की ओर से मंजूरी दिए जाने से विधेयक के मार्ग में आखिरी बाधा भी दूर हो गई है। अब इसे राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी के पास भेजा जाएगा, जिनके जल्द ही इस पर हस्ताक्षर कर देने की उम्मीद है। इस विधेयक के तहत, अधिकारी एक एजेंसी डिजिटल अधिकार संरक्षण प्राधिकरण (डीआरपीए) बनाएंगे, जिसके पास सोशल मीडिया पर ÷गैरकानूनी और आपत्तिजनक÷ समझी जाने वाली सामग्री को तत्काल ब्लॉक करने का आदेश देने की शक्ति होगी। न्यायाधीशों, सशस्त्र बलों, संसद या प्रांतीय विधानसभाओं की आलोचना करने वाली सामग्री को भी ब्लॉक किया जा सकेगा। जो लोग इसका पालन करने में विफल रहेंगे, उन्हें अस्थायी या स्थायी प्रतिबंध का सामना करना पड़ सकता है। कानून में गलत सूचना फैलाना भी एक आपराधिक कृत्य माना गया है, जिसके लिए तीन साल की जेल और 20 लाख रुपये (7,150 अमेरिकी डॉलर) का जुर्माना या दोनों हो सकते हैं।

'मौत के बाद क्या होता है?', जानने के लिए छात्रा ने काट ली हाथ की नस; हुई मौत

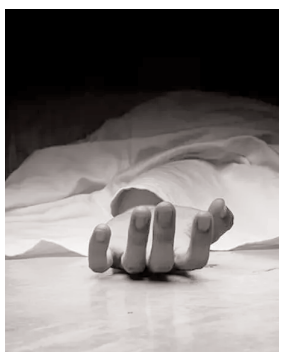

नागपुर (एजेंसी)। जिले के धंतोली थाना क्षेत्र में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। आपने सुसाइड करने की कई वजहें सुनी होंगी, लेकिन आत्महत्या की इस वजह को जानकर आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। यहां एक 17 साल की छात्रा ने अपने ही हाथ की नस काट कर आत्महत्या कर ली। उसके सुसाइड के पीछे की वजह के बारे में बताया जा रहा है कि वह जानना चाहती थी कि मृत्यु के बाद क्या होता है।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार नागपुर के रिंग रोड निवासी 17 साल की लड़की ने आत्महत्या कर दी। वह अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी। छात्रा ने एक चाकू से अपनी कलाई काट कर आत्महत्या कर ली। पुलिस का दावा है कि छात्रा के कमरे से जब्त विशेष प्रकार का चाकू नागपुर में नहीं मिलता है। संभावना जताई जा रही है कि इसे ऑनलाइन मंगवाया होगा। वहीं साइबर विशेषज्ञ छात्रा के मोबाइल की जांच कर रहे हैं।

पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार छात्रा ने इस घटना को रविवार की रात को अंजाम दिया है। सोमवार को जब उसकी मां उसे जगाने के लिए उसके कमरे में गई तो वह खून से लथपथ हालत में बेड पर पड़ी थी। यह देखकर मां की चीख निकल गई। वहीं शोर सुनकर छात्रा के पिता भी कमरे की ओर दौड़े। वहीं बेटी को इस अवस्था में देखकर उनका भी बुरा हाल हो गया। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार छात्रा को लगभग 10 से 12 विदेशी लैंग्वेज भी आती थी। वह पढ़ने में काफी तेज थी।

मौनी अमावस्या पर रेलवे ने श्रद्धालुओं को दी खुशखबरी

प्रयागराज से हर 4 मिनट पर मिलेंगी ट्रेनें

नई दिल्ली (एजेंसी)। 29 जनवरी को मौनी अमावस्या के दिन प्रयागराज महाकुंभ 2025 के दूसरे अमृत स्नान से पहले महाकुंभ मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है। श्रद्धालुओं की सहूलियत को देखते हुए रेलवे कल यानी 29 जनवरी को 60 स्पेशल ट्रेनें चलाएगा। मौनी अमावस्या से पहले भारतीय रेलवे द्वारा किए गए इंतजामों पर रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष और सीईओ सतीश कुमार ने कहा कि हमने सावधानीपूर्वक योजना बनाई है और 13-14 जनवरी को अपने अनुभव से सीखा है।

190 स्पेशल ट्रेनें बुधवार को चलेंगी: पूर्व के अलावा 60 विशेष ट्रेनें बुधवार को निर्धारित संख्या में चलेगी। कुल मिलाकर190 स्पेशल ट्रेनें चलेंगी। उस रूट पर 110 नियमित ट्रेनें हमेशा की तरह चलेंगी। प्रयागराज से हर 4 मिनट में ट्रेन उपलब्ध होगी और यह एक बड़ी उपलब्धि है। अधिकारी और रेलवे कर्मचारी तैनात और चालू हैं अलर्ट। हम हर मिनट उनसे अपडेट ले रहे हैं।

करीब 10 हजार आरपीएफ जवान रहेंगे तैनात : सतीश कुमार ने बताया कि वॉर रूम एक्टिव हो गया है। हमें बुधवार को कम से कम 10 करोड़ आगंतुकों की उम्मीद है। हमारी सभी मशीनरी बहुत सक्रिय है और राज्य सरकार के साथ समन्वय में है। 8000-10000 आरपीएफ जवानों को ट्रेनों और रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के लिए तैनात किया जाता है।

नौ स्टेशनों से चलेंगी ट्रेनें: रेलवे ने बताया कि 150 से ज्यादा चलने वाली ट्रेनों को प्रयागराज जंक्शन, सूबेदारगंज, नैनी, प्रयागराज छिवकी, प्रयाग जंक्शन, फाफामऊ, प्रयागराज रामबाग, प्रयागराज संगम और झूंसी से चलाया जाएगा। प्रयागराज रेल मंडल के वरिष्ठ जनसंपर्क अधिकारी अमित मालवीय ने बताया कि 29 जनवरी को मौनी अमावस्या पर 150 से अधिक मेला स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया जाएगा।

संभल हिंसा के एक और आरोपी गिरफ्तार

संभल (एजेंसी)। यूपी के संभल में हुई हिंसा मामले में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस लगातार सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पहचान कर आरोपियों को जेल भेज रही है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज से पहचान कर आरोपी सोहेल को गिरफ्तार किया है। पुलिस अब तक 73 आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज चुकी है। आरोपी को नखासा थाना क्षेत्र के खग्गू सराय से गिरफ्तार किया गया है। संभल की जामा मस्जिद में हरिहर मंदिर में दावा करते हुए एक याचिका कोर्ट में डाली गई थी। कोर्ट के आदेश पर 19 और 24 नवंबर 2024 को जामा मस्जिद का सर्वे किया गया था। 24 नवंबर को भीड़ उग्र हो गई और पथराव किया था। हिंसा में पांच लोगों की मौत हो गई थी। दरअसल संभल में कोर्ट के आदेश के बाद पुलिस की मौजूदगी में मुगलों के समय की मस्जिद का सर्वेक्षण हो रहा था। इस दौरान कई लोग सर्वेक्षण का विरोध करने आ गए और पुलिसकर्मियों के साथ उनकी झड़प हो गई।

सिद्धिविनायक मंदिर में श्रद्धालुओं के लिये बनाया गया ड्रेस कोड

मंगलवार को मंदिर में आने वाले सभी भक्तों के लिए एक ड्रेस कोड लागू

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई के सिद्धिविनायक गणपति मंदिर की प्रबंधन समिति ने मंगलवार को मंदिर में आने वाले सभी भक्तों के लिए एक ड्रेस कोड लागू करने की घोषणा की। प्रबंधन समिति ने एक बयान जारी कर कहा कि श्री सिद्धिविनायक गणपति मंदिर में आने वाले भक्तों को ऐसे कपड़े पहनने चाहिए जो शालीनता बनाए रखें और पवित्रता का सम्मान करें। मंदिर में अनुचित पोशाक, जैसे कट-ऑफ जींस, स्कर्ट, खुले कपड़े या शॉर्ट कपड़े पहनने वालों को भगवान गणपति के दर्शन की अनुमति नहीं दी जाएगी।

मंदिर ट्रस्ट ने यह फैसला पवित्र स्थान की पवित्रता और मर्यादा को संरक्षित करने के उद्देश्य से दिशानिर्देश लागू करने का निर्णय लिया है। मंदिर प्रशासन की तरफ से जारी गाइडलाइन में कहा गया है कि शॉर्ट कपड़े पहनने पर मंदिर परिवार में जाने की इजाजत नहीं दी जाएगी।

एक आधिकारिक बयान में, सिद्धिविनायक श्राइन ट्रस्ट ने घोषणा की कि केवल पारंपरिक भारतीय पोशाक या पूरे शरीर को ढंकने वाले कपड़े पहनने वाले आगंतुकों को ही दर्शन के लिए प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। नई नीति सभी आगंतुकों के आराम और सम्मान को सुनिश्चित करने के लिए भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों के अनुरूप शालीन कपड़े पहनने के महत्व पर जोर देती है।

अभी तक कोई भी फिंगरप्रिंट रिपोर्ट नहीं आई

सैफ अली खान मामले में पुलिस ने किया बड़ा खुलासा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सैफ अली खान चाकूबाजी मामले में पुलिस ने एक बड़ा खुलासा किया है। फिंगरप्रिंट को लेकर पुलिस ने बताया है कि अभी तक कोई भी फिंगरप्रिंट रिपोर्ट नहीं आई है। पुलिस ने यह भी कहा कि जिस आरोपी को गिरफ्तार किया है उसके खिलाफ भरपूर सबूत हैं। उन्होंने कहा कि कोई और आरोपी नहीं है लेकिन जो उनके संपर्क में आया था, उससे पूछताछ चल रही है। पुलिस ने कहा कि आरोपी के खिलाफ भरपूर सबूत मिले हैं और जांच अच्छी चल रही है।

फेस रिकग्निशन को लेकर पुलिस ने कहा कि यह ऑप्शन हमारे पास है, हम एक्सप्लोर कर रहे हैं। फेशियल रिकग्निशन को लेकर ऑप्शन होते हैं, ये जांच का हिस्सा है। उन्होंने बताया कि ष्ट्ठष्ठ को जांच के लिए फिंगरप्रिंट भेजे गए हैं। केस इन्वेस्टिगेशन ऑफिसर बदलने को लेकर पुलिस ने कहा कि उस रात इन्वेस्टिगेशन ऑफीसर नाइट में थे, ये एडमिनिस्ट्रेशन का हिस्सा है। उन्होंने बताया कि सैफ 2.40 बजे को अस्पताल पहुंच गए थे, सीसीटीवी फुटेज हमारे पास है।

इससे पहले मुंबई पुलिस ने परीक्षण और जांच के लिए अभिनेता के ब्लड सैंपल और कपड़े जमा कर लिए थे। एक अधिकारी ने कहा था कि सैफ के खून के नमूने और कपड़े और हमलावर के कपड़े फॉरेंसिक लैब (एफएसएल) में भेजे गए, ताकि हमलावर के कपड़ों पर दिखे खून के धब्बे अभिनेता के ही हों, यह साबित किया जा सके।

हाल में हुआ था हमला: बता दें कि कुछ दिन पहले ही सैफ अली खान के आवास पर डकैती की कोशिश के दौरान हमलावर द्वारा कई बार चाकू मारा गया था। इस हमले में सैफ घायल हो गए थे, जिसके बाद उनको तुरंत लीलावती अस्पताल ले जाया गया जहां उनकी सर्जरी की गई। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद सैफ को कम से कम दो सप्ताह आराम करने की सलाह दी गई थी।

मैं इस्लाम नहीं मानती लेकिन...

मुस्लिम महिला की अर्जी पर सुप्रीम कोर्ट भी कंफ्यूज, केंद्र से मांगा जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। देशभर में समान नागरिक संहिता (ष्ठ्ठ) पर चल रही बहस के बीच सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से पूछा है कि क्या मुस्लिम परिवार में जन्मा व्यक्ति संपत्ति के मामले में धर्मनिरपेक्ष कानूनों का पालन कर सकता है या मुस्लिम पर्सनल लॉ शरिया का पालन करने के लिए बाध्य है। इसका जवाब देश की शीर्ष न्यायालय सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार से मांगा है। भारत के मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना की अगुवाई वाली बेंच ने केंद्र को जवाब दाखिल करने के लिए चार हफ्ते का समय दिया है। मई के दूसरे सप्ताह में सुप्रीम कोर्ट मामले को सुनेगा।

मामले में याचिकाकर्ता केरल के अलप्पुझा की साफिया पी.एम. नाम की महिला है। उसका कहना है कि उसका परिवार नास्तिक है, लेकिन शरीयत के प्रावधान के चलते एक पिता चाह कर भी अपनी बेटी को 1 तिहाई से अधिक संपत्ति नहीं दे सकते हैं। बाकी संपत्ति पर भविष्य में पति के भाइयों के परिवार का कब्जा हो जाने की आशंका है। याचिका दाखिल करने वाली साफिया और उसके पति नास्तिक हैं, लेकिन जन्म से मुस्लिम होने के चलते उन पर शरीयत कानून लागू होता है। याचिकाकर्ता का बेटा डाउन सिंड्रोम नाम की बीमारी के चलते असहाय है। बेटी उसकी देखभाल करती है। शरीयत कानून में बेटी को बेटे से आधी संपत्ति मिलती है। ऐसे में पिता बेटी को 1 तिहाई संपत्ति दे सकते हैं, बाकी 2 तिहाई उन्हें बेटे को देनी होगी। अगर भविष्य में पिता और भाई की मृत्यु हो जाएगी तो भाई के हिस्से वाली संपत्ति पर पिता के भाइयों के परिवार का दावा बन जाएगा। सफिया ने अपनी याचिका में कहा है कि वह और उसके पति मुस्लिम नहीं हैं, इसलिए उन्हें भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम के दिशा-निर्देशों के अनुसार संपत्ति का बंटवारा करने की अनुमति दी जानी चाहिए। वर्तमान में भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम मुसलमानों पर लागू नहीं होता। साफिया की याचिका में इसे चुनौती दी गई है।

मामले में याचिकाकर्ता की दलील है कि संविधान का अनुच्छेद 25 लोगों को अपने धर्म का पालन करने का मौलिक अधिकार देता है। यही अनुच्छेद इस बात का भी अधिकार देता है कि कोई चाहे तो नास्तिक हो सकता है इसके बावजूद सिर्फ किसी विशेष मजहब को मानने वाले परिवार में जन्म लेने के चलते उसे उस मजहब का पर्सनल लॉ मानने के लिए बाध्य नहीं किया जाना चाहिए। वकील ने यह भी कहा था कि अगर याचिकाकर्ता और उसके पिता लिखित में यह कह देंगे कि वह मुस्लिम नहीं है, तब भी शरीयत के मुताबिक उनकी संपत्ति पर उनके रिश्तेदारों का दावा बन जाएगा।

राहुल गांधी ने केजरीवाल पर बोला बड़ा जुबानी हमला

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीनियर कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने वेस्ट विनोद नगर में एक रैली को संबोधित करते हुए बीजेपी और आम आदमी पार्टी पर जमकर निशाना साधा। राहुल गांधी ने कहा कि ÷केजरीवाल जो मन में आता है बोल देते हैं। याद है आपको केजरीवाल जी पोल पर चढ़ गए, कहा था अलग तरह की राजनीति करेंगे। उनका घर अपने देख लिए, घर नहीं शीश महल है। साफ राजनीति की बात करके आए थे और सबसे बड़ा शराब घोटाला दिल्ली का हुआ।

राहुल गांधी ने कहा कि केजरीवाल जब राजनीति में आए थे, तो उनके पास एक छोटी कार थी और उन्होंने कहा था कि वह एक नई तरह की राजनीति करेंगे। उन्होंने कहा था कि वह दिल्ली को बदल देंगे, लेकिन जब गरीबों को जरूरत थी तो वह वहां नहीं थे। जब दंगे हुए तो वह वहां नहीं थे। उन्होंने कहा था कि वह साफ-सुथरी राजनीति करेंगे। केजरीवाल एक महल शीश महल में रहते हैं..ये है उनकी सचाई। बता दें कि बीजेपी भी अरविंद केजरीवाल पर कथित शराब घोटाला और मुख्यमंत्री आवास को शीश महल कहकर लगातार हमला बोलती रही है।

महिला बाल विकास के रिक्त पदों पर चयनित अभ्यर्थियों का अभिलेख सत्यापन 28 से 31 जनवरी तक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश कर्मचारी चयन मंडल भोपाल द्वारा महिला एवं बाल विकास विभाग के रिक्त पदों की पूर्ति के लिये सीधी भर्ती से चयनित अभ्यर्थियों को अभिलेख सत्यापन का अंतिम अवसर प्रदान किया जा रहा है। जो अभ्यर्थियों अपरिहार्य कारणों से 16 एवं 17 जनवरी 2025 को उपस्थित नहीं हो पाये उन्हें अंतिम अवसर प्रदान करते हुए 28 से 31 जनवरी, 2025 तक कार्यालयीन समय पर अपने समस्त मूल अभिलेख एवं एक सेट स्व-प्रमाणित छायाप्रति के साथ अभिलेखों के परीक्षण/सत्यापन के लिये उपस्थित होना है। अभ्यर्थी वेबसाइट से अपना सूचना-पत्र डाउनलोड कर संचालनालय महिला बाल विकास, वात्सलय भवन भोपाल में उपस्थित होना सुनिश्चित करें। चयनित अभ्यर्थियों की प्रतीक्षा सूची संचालनालय के वेबसाइट पर उपलब्ध है। इस संबंध में अधिक जानकारी के लिये श्रीमती सुलभा पटेल से मोबाइल नंबर 9424413185 पर संपर्क कर सकते हैं।

प्रदेश में पीएम स्वनिधि योजना में पथ विक्रेताओं को 1769 करोड़ रूपये का ऋण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नगरीय विकास एवं आवास विभाग प्रदेश में पथ विक्रेताओं और रेहड़ी-पटरी वालों को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिये पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से ऋण उपलब्ध करा रहा है। प्रदेश में अब तक 12 लाख 30 हजार हितग्राहियों को लगभग 1769 करोड़ 16 लाख रूपये का ऋण उपलब्ध कराया गया है। प्रदेश में यह योजना पिछले 4 वर्षों से संचालित हो रही है। मध्यप्रदेश उल्लेखनीय कार्य करते हुए पिछले 3 वर्षों से प्रथम स्थान पर है। योजना में रेहड़ी-पटरी वालों को डिजिटल लेन-देन के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है। पीएम स्वनिधि योजना में 4 लाख 89 हजार पथ विक्रेता अपने कारोबार में सफलतापूर्वक डिजिटल लेन-देन कर रहे हैं। डिजिटल लेन-देन के कारण 21 करोड़ रूपये की राशि कैशबेक के रूप में भी प्राप्त हुई है।

30 जनवरी को मद्य निषेध संकल्प दिवस मनाया जाएगा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। महात्मा गांधी की पुण्यतिथि 30 जनवरी 2025 को मध्यप्रदेश में मद्य निषेध संकल्प दिवस मनाया जाएगा। संचालनालय, सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण, मध्यप्रदेश ने सभी जिलों के कलेक्टर, जिला पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों और संबंधित अधिकारियों को क्रियान्वयन के निर्देश जारी किए हैं।

आयुक्त, सामाजिक न्याय डॉ. आर.आर. भौंसले ने बताया है कि मद्य निषेध संकल्प दिवस का मुख्य उद्देश्य समाज और विशेषकर युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराते हुए उन्हें नशा त्यागने के लिए प्रेरित करना है। इसमें विभिन्न गतिविधियां जैसे सेमिनार, रैली, प्रदर्शनी, वाद-विवाद प्रतियोगिता, निबंध लेखन, पोस्टर प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम और मानव श्रृंखला का आयोजन किया जाएगा।

आयोजन में उपस्थित व्यक्तियों को मादक पदार्थों और मदिरा त्यागने का संकल्प दिलाया जाएगा और उनसे संकल्प पत्र भरवाए जाएंगे। इस पहल का उद्देश्य प्रदेश में नशामुक्ति का वातावरण निर्मित करना है।

एमपी में पौने 3 लाख पीएम आवास बनेंगे

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केंद्रीय बजट में किसान सम्मान निधि की राशि को बढ़ाने का ऐलान हो सकता है। ऐसा हुआ तो मप्र के 80 लाख किसानों को दूसरे राज्यों के किसानों की तुलना में ज्यादा फायदा होगा। एमपी के किसानों को इस योजना में सालाना 18 हजार रु. मिलेंगे। इसके अलावा केंद्रीय बजट में एमपी की सड़कों व पुलों के निर्माण के लिए करीब 2800 करोड़ रु. अतिरिक्त मिलेंगे। इसमें से सबसे ज्यादा 1100 करोड़ रु. जबलपुर में खर्च होंगे। वहीं पीएम आवास योजना 2.0 के तहत एमपी में 2 लाख 77 हजार मकान बनने वाले हैं।

वित्त विभाग के सूत्रों के मुताबिक केंद्रीय बजट में इसके लिए राशि का प्रावधान किया जा सकता है। मंडे स्पेशल में पढ़िए केंद्रीय बजट में मप्र को और क्या मिल सकता है... केंद्रीय बजट में किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) के तहत लोन की सीमा 5 लाख रुपए की जा सकती है। इस समय 3 लाख रु. लोन की लिमिट है। ये काफी पहले बढ़ाई गई थी। सरकार के पास इस सीमा को बढ़ाने की मांग लगातार आ रही है। किसान क्रेडिट कार्ड योजना 1998 में शुरू की गई थी। इसके तहत खेती और उससे जुड़ी गतिविधियों के लिए किसानों को 9 फीसदी ब्याज दर पर अल्पकालीन फसल लोन दिया जाता है। लेकिन मध्य प्रदेश में किसानों को बिना ब्याज के ऋण देने की व्यवस्था है। परंतु बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋण की लागत की प्रतिपूर्ति सरकार ब्याज अनुदान देकर करती है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जापान में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जापान के टोक्यो में एडोगावा सिटी स्थित गांधी पार्क में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित कर नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत की चर्चा करते हुए कहा कि बापू के आदर्श आज भी पूरी दुनिया में लोगों को प्रेरित करते है। उन्होंने महात्मा गांधी के विचारों को भारत-जापान संबंधों से जोड़ते हुए कहा कि बापू का अहिंसा का सिद्धांत जापान के गौतम बुद्ध के सिद्धांतों के साथ मेल खाता है। यह दोनों देशों के बीच गहरे संबंधों को दर्शाता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नायकों का उल्लेख करते हुए कहा, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, रासबिहारी बोस, स्वामी

विवेकानंद और रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे महान नेता जापान से जुड़ी हमारी ऐतिहासिक मित्रता का प्रतीक हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश में 24-25 फरवरी 2025 को आयोजित होने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025 की महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि जापान आज प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अग्रणी है। यह भारत और मध्यप्रदेश के लिए निवेश और व्यापार के नए अवसरों की संभावनाएं प्रस्तुत करता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विश्वास व्यक्त किया कि भारत और जापान के बीच संबंधों में और प्रगाढ़ता आएगी और दोनों देशों के बीच साझेदारी के नए रास्ते खुलेंगे। उन्होंने इस अवसर पर सभी को शुभकामनाएं भी दीं।

मध्यप्रदेश के जल जीवन मिशन के तहत जल आपूर्ति के प्रयासों की केंद्रीय मंत्री पाटिल ने की प्रशंसा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल की अध्यक्षता में नई दिल्ली में जल जीवन मिशन के तहत जल आपूर्ति योजनाओं के संचालन और रखरखाव पर केंद्रित बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में मध्यप्रदेश लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के प्रतिनिधियों तथा विशेष रूप से आमंत्रित जलापूर्ति और रखरखाव में स्वेच्छा से सहयोग देने वाले सदस्यों ने भाग लिया।

बैठक में जल जीवन मिशन के संचालन को और अधिक प्रभावी बनाने की रणनीति पर चर्चा की गई। मध्यप्रदेश के प्रतिनिधियों ने राज्य में संचालित जल जीवन मिशन की उपलब्धियों और योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रक्रिया का विस्तृत प्रस्तुतिकरण दिया।

मध्यप्रदेश के लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग ने जल जीवन मिशन के अंतर्गत जल आपूर्ति योजनाओं के संचालन और रखरखाव में अपनी सक्रिय भूमिका

के साथ राज्य की अग्रणी स्थिति को रेखांकित किया। विभाग ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जल प्रदाय की सुदृढ़ व्यवस्था को सुनिश्चित करने के लिए अपनाई गई तकनीकों और सुधारात्मक उपायों को साझा किया। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री श्री सी.आर. पाटिल ने मध्यप्रदेश के प्रयासों की सराहना करते हुए जल जीवन मिशन के उद्देश्यों को साकार करने में राज्य की प्रतिबद्धता की सराहना की।

किसान कल्याण मिशन का लक्ष्य है किसानों की आय बढ़ाना

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। देश के विकास के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गरीब, युवा, किसान और नारी पर ध्यान का मंत्र दिया है। प्रधानमंत्री के मंत्र को ध्येय बनाकर इसके एक प्रमुख स्तंभ किसान के विकास के लिए कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाने का उद्देश्य इस मिशन का प्रमुख ध्येय है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि किसान कल्याण मिशन का लक्ष्य किसानों की आय में वृद्धि है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के अनुसार किसान सशक्तिकरण किसी भी सरकार के लिए प्राथमिकता है। इस पर अमल के जरिये ही देश को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया जा सकता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार किसानों की आय दोगुनी करने, उन्हें तकनीक-प्रेमी बनाने और कृषि-संबंधी बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के लक्ष्य पर काम कर रही है। मध्यप्रदेश का कृषि उत्पादन में निरंतर अग्रणी स्थान रहा है। प्रदेश को 7 बार कृषि कर्मण अवॉर्ड भी प्राप्त हुए हैं। मुख्यमंत्री सोलर पम्प योजना, अब प्रधानमंत्री कृषक मित्र सूर्य योजना के नाम से लागू है। अटल कृषि योजना से भी लगभग 26 लाख 59 हजार कृषि उपभोक्ता लाभान्वित हो रहे हैं। प्रदेश में प्रतिदिन गैर-कृषि उपभोक्ताओं को 24 घंटे एवं कृषि उपभोक्ताओं को 10 घंटे गुणवत्तापूर्ण विद्युत प्रदाय की जा रही है। प्रदेश में वर्तमान में कुल विद्युत उपलब्ध क्षमता 24 हजार 108 मेगावॉट है। मध्यप्रदेश, विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में सरप्लस की स्थिति में है।

प्रयागराज में म.प्र. के एकात्म धाम मंडपम् में हुआ शास्त्रार्थ

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, मध्यप्रदेश शासन के तत्वाधान में प्रयागराज महाकुंभ के सेक्टर-18 में लगें एकात्म धाम मंडपम् में दो दिवसीय शास्त्रार्थ सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में देश भर के 15 विद्वानों ने हिस्सा लिया। शास्त्रार्थ सभा की अध्यक्षता श्रृंगेरी शंकराचार्य श्री श्री विधुशेखर भारती जी ने की। उन्होंने कार्यक्रम के अंतिम सत्र में सभा को संबोधित किया व विद्वानों और शंकरदूतों को आर्शीवाद दिया। दुखों से बाहर आना ही मोक्ष है। मोक्ष की प्राप्ति के लिए वैदिक परंपरा का अनुसरण करना होगा। वैदिक परंपरा विश्व का आधार है और यही पूरे विश्व में व्याप्त दुखों को नष्ट कर सकती है। इस पर संकट का अर्थ है पूरे विश्व में संकट

आना। आदि शंकराचार्य के उपदेशित मार्ग पर चलने से ही प्रत्येक व्यक्ति की भलाई हो सकती है। समाज का कल्याण आदि शंकराचार्य के ज्ञान से ही हो सकता है।

यह बात श्रृंगेरी शंकराचार्य ने प्रयागराज महाकुंभ में लगे मध्यप्रदेश के एकात्म धाम मंडपम में चल रही शास्त्रार्थ सभा के अंतिम दिन अपने संबोधन में कही। शास्त्रार्थ में देशभर से आए 15 विद्वानों ने अपने पक्ष को सिद्ध करने के लिए शंकराचार्य के समक्ष तर्क रखे। यह शास्त्रार्थ 8 घंटे तक सतत् रूप से संस्कृत में हुआ। इसमें अद्वैत परंपरा आचार्यों का वैशिष्ट्य विवेचन, मिथ्यात्व निरूपण, ब्रह्मसूत्र, जगतकारण विमर्श जैसे विषयों पर चर्चा हुई। शास्त्रार्थ के विषय में कहा कि संवाद में बुद्धिमान की विजय होती है परन्तु ऐसा जरूरी नहीं कि जीतने वाला हमेंशा शास्त्र सम्मत हो। इसके लिए वैदिक परंपरा में विश्वास रखना जरूरी है। हमारे लिए वेद प्रमाण है, वैदिक परंपरा में जो विश्वास रखते है उनके वचन को प्रमाणित करने के लिए भगवान स्वयं आ जाते है। श्रृंगेरी शंकराचार्य ने कहा कि प्रयागराज की धरती पर आदि शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट का संगम हुआ था। वे अपने भाष्य पर वार्तिक रचना के लिए कुमारिल भट्ट से मिलने आए थे। उन्होंने कहा कि वेदों के विषय में मन में कोई संदेह नहीं होना चाहिए और पूर्ण विश्वास रखना चाहिए। भारत के अतिरिक्त दुनिया के हर कोने ने सिर्फ जीवन जीने के लिए क्या जरूरी है उसकी बात होती है, लेकिन भारत की वैदिक परंपरा अनादि काल से जीवन को सार्थक बनाना सिखा रही है। श्रृंगेरी शंकराचार्य ने मध्यप्रदेश शासन की एकात्म धाम की संकल्पना को धरातल पर उतारने के लिए सराहना की।

इंदौर की रीना और पार्वती को मिली मुख्यमंत्री कल्याणी पेंशन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केन्द्र और राज्य सरकार की चिन्हित हितग्राही मूलक योजनाओं में शत-प्रतिशत सेचुरेशन एवं लक्ष्य आधारित योजनाओं में उपलब्धि प्राप्त करने प्रदेश में 11 दिसम्बर 2024 से 26 जनवरी 2025 तक मुख्यमंत्री जन-कल्याण अभियान चलाया गया। अभियान अन्तर्गत लाखों पात्र हितग्राहियों को चिन्हित कर विभिन्न शासकीय योजनाओं से लाभांवित किया गया। मुख्यमंत्री जन-कल्याण अभियान का सोमवार को इंदौर में समापन कार्यक्रम हुआ।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने चयनित पात्र हितग्राहियों को प्रतीकात्मक रूप से प्रमाण-पत्र देकर विभिन्न शासकीय योजनाओं से लाभांवित किया। इंदौर के गांधी नगर में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने झाबुआ जिले के हितग्राही श्री दिलीप मुलेगा को खाद्य प्र-संस्करण उद्योग के लिये वित्तीय सहायता प्रदान की। इसी तरह खरगौन जिले के श्री पवन कर्मा को आयुष्मान भारत योजना, बड़वानी जिले के श्री जितेन्द्र मेवाड़े को खाद्य प्र-संस्करण उद्योग के लिये वित्तीय सहायता, आलीराजपुर जिले के श्री शम्भुलाल राठौर को आयुष्मान भारत योजना, देवास के श्री भारत सिंह को आयुष्मान भारत योजना, इंदौर जिले की श्रीमती रीना कृष्ण कुमार को मुख्यमंत्री कल्याणी पेंशन, श्रीमती रोशनी मंसारे को निर्माण श्रमिक का पंजीयन, श्री रामनारायण बागड़ी को आयुष्मान भारत योजना, कुमारी रूपाली मधुबाला विश्वकर्मा को लाड़ली लक्ष्मी योजना, श्री बबन गौरे को वृद्धावस्था पेंशन योजना, श्रीमती पार्वती कोहठी को कल्याणी पेंशन योजना, श्री भंवर सिंह को विमुक्त घुमक्कड़ एवं अर्द्ध घुमक्कड़ जाति प्रमाण पत्र देकर लाभांवित किया।

श्रमिक परिवारों की बेटियों ने रचा इतिहास-श्रमोदय मॉडल आईटीआई बना सफलता की नई पहचान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। कभी अपने परिवार की आर्थिक परेशानियों के बीच संघर्ष करतीं स्नेह धाकड़, करिश्मा मल्होत्रा और ऋतु कुशवाहा ने आज अपनी मेहनत और लगन से मध्यप्रदेश का नाम रोशन कर दिया है। श्रमोदय मॉडल आईटीआई, भोपाल से पढ़ने वाली इन तीन बेटियों ने राज्य व्यावसायिक प्रशिक्षण परिषद (एससीवीटी) परीक्षा में पहला, दूसरा और तीसरा स्थान हासिल करके यह साबित कर दिया कि सही अवसर और मार्गदर्शन मिलने पर हर सपना पूरा किया जा सकता है। शिवपुरी के श्रमिक की बेटी कु. स्नेह धाकड़ ने परीक्षा में पहला स्थान प्राप्त कर इतिहास रच दिया। इसी तरह कु. करिश्मा मल्होत्रा ने दूसरा और कु. ऋतु कुशवाह ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इन सभी के परिवार भी सीमित संसाधनों के बावजूद अपने बच्चों के सपनों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे है। कु. स्नेह कहती हैं, श्रमोदय मॉडल आईटीआई ने मुझे प्रशिक्षण ही नहीं, बल्कि सपनों को उड़ान देने का मंच दिया है। यहां की सुविधाओं और शिक्षकों के सहयोग से ही यह संभव हो पाया है। मैं परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के लिए इंजीनियर बनना चाहती हूँ। संस्थान की इस उपलब्धि पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, यह सफलता न केवल इन बच्चियों की मेहनत का परिणाम है, बल्कि यह श्रमोदय मॉडल आईटीआई की बेहतरीन शिक्षा और सुविधाओं का प्रमाण है।

प्रदेश के टॉप 25 में 18 स्थान इस संस्थान के विद्यार्थियों के नाम हैं, जो कौशल विकास के क्षेत्र में मध्यप्रदेश के लिए गर्व की बात है। यह प्रेरणा का स्रोत है कि अगर बच्चों को सही मंच और मार्गदर्शन मिले, तो वे हर चुनौती को पार कर सकते हैं। शिवपुरी जिले की कु. स्नेह ने परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनके पिता मंडी में मजदूरी करते हैं और मां काजू पैकेजिंग का काम करती हैं। सीमित संसाधनों के बावजूद स्नेह ने कड़ी मेहनत और आत्म-विश्वास से यह मुकाम हासिल किया है। वह कहती हैं, संस्थान ने हमें न केवल पढ़ाई के लिए स्मार्ट कक्षाओं की सुविधाएं दीं, बल्कि हमें खुद पर विश्वास करना भी सिखाया। अब मैं अपने परिवार को एक बेहतर भविष्य देना चाहती हूं। कु. करिश्मा ने दूसरा स्थान हासिल किया है, उनके पिता भी मजदूरी करते हैं। कु. करिश्मा ने कहा कि श्रमोदय मॉडल आईटीआई का वातावरण और शिक्षण पद्धति हमारी सफलता की बुनियाद हैं। यहां न केवल हमें प्रशिक्षण मिला, बल्कि हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन भी किया गया। अब मेरा सपना है कि मैं अपने परिवार के संघर्षों का अंत कर सकूं।

राष्ट्रीय खेल में मध्यप्रदेश ने जीता पहला पदक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने उत्तराखंड में आयोजित राष्ट्रीय खेल-2025 में मध्यप्रदेश की टीम ने ट्राइथलॉन मिश्रित रिले में रजत पदक जीतकर इतिहास रचने पर टीम को बधाई देते हुए कहा कि ट्राइथलॉन जैसे चुनौतीपूर्ण खेल में हमारी टीम ने अपनी लगन और सामूहिक प्रयास से यह उपलब्धि हासिल की है। यह इन खेलों में राज्य का पहला पदक है, जिससे प्रदेश में हर्ष और गर्व का माहौल है। यह पदक उनकी मेहनत, समर्पण और सही मार्गदर्शन का नतीजा है। हमें गर्व है कि हमारे खिलाड़ी राष्ट्रीय खेलों में एक नया आयाम स्थापित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार खिलाड़ियों को हरसंभव सहयोग प्रदान कर रही है। ट्राइथलॉन प्रतियोगिता में खिलाड़ियों को शारीरिक और मानसिक मजबूती का परिचय देते हुए 10 कि.मी. साइकिलिंग, 2.5 कि.मी. दौड़ और 250 मीटर तैराकी करनी होती है। मध्यप्रदेश की टीम ने इन तीनों चरणों में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए शानदार तालमेल का प्रदर्शन किया। मध्यप्रदेश की टीम में अंकुर चाहर, दुर्विशा पवार, रोशन गोंड और आध्या सिंह ने अपनी मेहनत और दृढ़ संकल्प से दूसरा स्थान हासिल किया। सभी खिलाड़ी कोच मनोज झा के मार्गदर्शन में पिछले कई वर्षों से कठिन प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक महाराष्ट्र ने जीता, जबकि कांस्य पदक तमिलनाडु की टीम के हिस्से में गया। यह उपलब्धि मध्यप्रदेश की खेल नीति और खिलाड़ियों के निरंतर प्रयास का प्रमाण है। ट्राइथलॉन जैसी कठिन प्रतियोगिता में जीत हासिल करना खिलाड़ियों की कड़ी मेहनत और फिटनेस का प्रमाण है। तीनों चरणों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए टीम के सदस्यों ने शारीरिक और मानसिक मजबूती का परिचय दिया। इस ऐतिहासिक जीत से मध्यप्रदेश के खेल प्रेमियों में खुशी की लहर दौड़ गई है।

मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान का हुआ समापन

अभियान में जिले के 42 हजार से अधिक हितग्राहियों को मिला लाभ

हितग्राहियों को वितरित किए गए हितग्राही पात्रता प्रमाण-पत्र

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। प्रदेश के साथ-साथ सीधी जिले में भी गत 11 दिसंबर 2024 से 26 जनवरी 2025 तक संचालित मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान का समापन सोमवार 27 जनवरी 2025 को किया गया। इस अवसर पर सभी ग्राम पंचायतों एवं नगरीय निकायों में कार्यक्र मों का आयोजन कर जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में हितलाभ का वितरण किया गया। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के मुख्य आतिथ्य में हितग्राही सम्मेलन और सफाई मित्रों को किट वितरण कार्यक्र म का सजीव प्रसारण प्रदेश स्तरीय मुख्य समारोह इन्दौर से किया गया।

अभियान के दौरान जिले में कुल 472 शिविरों का आयोजन किया गया। शिविरों में विभिन्न योजनाओं से संबंधित 45 हजार से अधिक आवेदन प्राप्त हुए थे जिनमें से 95 प्रतिशत आवेदनों को निराकृत करते हुए 42 हजार से अधिक हितग्राहियों को शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित किया गया तथा उन्हें निर्धारित समय-सीमा में सेवाएं प्रदान की गई। शिविर अवधि में 19 हजार से अधिक हितग्राहियों के आयुष्मान कार्ड बनाए गए। 70 वर्ष से आयु के अधिक हितग्राहियों के घर-घर जाकर आयुष्मान कार्ड बनाए गए हैं। अभियान में प्रसूती सहायता के 236, मातृवंदना योजना के 686, पीएम किसान योजना के 854, मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के 625, निर्माण श्रमिकों के 7306 पंजीयन तथा 253 हितग्राहियों की अनुग्रह सहायता स्वीकृत की गई है। साथ ही 1500 से अधिक हितग्राहियों को विभिन्न पेंशन योजनाओं से लाभान्वित किया गया है। राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन से 962, समग्र सामाजिक सुरक्षा पेंशन से 360, राष्ट्रीय नि:शक्तता पेंशन से 158, मुख्यमंत्री कन्या अभिभावक पेंशन योजना से 14 हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया है। मुख्यमंत्री कल्याणी विवाह योजना से 80, राष्ट्रीय परिवार सहायता योजना से 61, मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना से 24 हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया। पीएम स्वनिधि योजना से 137 तथा मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ विक्र ेता ऋण योजना से 111 हितग्राहियों को लाभान्वित किया गया है।

कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी के निर्देशन तथा सीईओ जिला पंचायत अंशुमन राज के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान अंतर्गत प्रत्येक हितग्राही को हितग्राही पात्रता प्रमाण पत्र वितरित किए जा रहे हैं। हितग्राही पात्रता प्रमाण पत्र में शासन की सभी जनकल्याणकारी योजनाओं का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। यह बताया गया है कि उन्हें किन-किन योजनाओं का लाभ प्राप्त हो रहा हैं। साथ ही संबंधित सरपंच और सचिव द्वारा उक्ताशय का प्रमाण पत्र दिया जा रहा है कि परिवार का पात्रता अनुसार शत-प्रतिशत योजनाओं का लाभ दिया जा चुका है तथा कोई भी योजना का लाभ दिया जाना शेष नही है। प्रमाण-पत्र में छात्रों को मिलने वाली सभी प्रकार की छात्रवृत्तियों की जानकारी भी दी गई है।

सिर्फ दो आधार कार्ड केंद्र चालू

रोजाना 30 लोगों का ही काम हो पा रहा, सैकड़ों लोग लाइन में

मीडिया ऑडीटर, पन्ना (निप्र)। पन्ना जिले में आधार कार्ड से जुड़ी सेवाओं की स्थिति चिंताजनक है। जिला मुख्यालय में मात्र दो आधार केंद्र चालू हैं, जिनमें से एक पोस्ट ऑफिस में स्थित है। मंगलवार सुबह 10 बजे से ही लोगों की लंबी कतार देखी गई। हालांकि, केंद्र में सुबह 11 बजे से शाम 3 बजे तक केवल 30 लोगों के ही आधार कार्ड बनाए या अपडेट किए जा रहे हैं।

स्थिति की गंभीरता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि ब्लॉक स्तर पर अधिकांश आधार केंद्र बंद पड़े हैं। इसके चलते पूरे जिले के लोगों को जिला मुख्यालय का रुख करना पड़ रहा है। टोकन सिस्टम के तहत जिन 30 लोगों को मौका मिलता है, उन्हीं का काम हो पाता है, बाकी लोगों को निराश होकर लौटना पड़ता है।

शासन के आदेश के अनुसार, नगर पालिका, लोक सेवा केंद्र और सभी राष्ट्रीयकृत बैंकों में आधार केंद्र संचालित किए जाने चाहिए, लेकिन यह आदेश सिर्फ कागजों में ही सीमित है। पन्ना लोक सेवा केंद्र में भी आधार केंद्र बंद पड़ा है। आधार कार्ड की बढ़ती अनिवार्यता के बीच केंद्रों की यह कमी आम नागरिकों के लिए बड़ी परेशानी का सबब बन गई है। रोज सुबह से लाइन में लगने के बावजूद लोगों को निराश होकर लौटना पड़ रहा है।

21 साल के युवक की रामघाट में डूबने से मौत, दोस्तों के साथ पिकनिक पर आया था शख्स

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले के पिपरिया गांव के विकास विश्वकर्मा (21) की अमरकंटक के रामघाट में डूबने से मौत हो गई। विकास अपने दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने अमरकंटक आया था। मां नर्मदा के रामघाट तट पर दोस्तों के साथ स्नान करते समय यह हादसा हुआ।

दोस्तों के साथ घाट पर मस्ती कर रहा था युवक: विकास जब नदी में कूदा तो कुछ देर तक बाहर नहीं निकला। शुरुआत में उसके दोस्त समझे कि वह मजाक कर रहा है। लेकिन जब काफी समय तक बाहर नहीं आया तो दोस्तों ने उसे नदी से बाहर निकाला। उसके शरीर से पानी निकालने की कोशिश की।

जब कोई हरकत नहीं दिखी तो उसे तुरंत स्थानीय स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। विकास के दोस्तों ने इस घटना की सूचना अमरकंटक पुलिस थाने में दी है। शव को पीएम के लिए भिजवाया गया है।

जनसुनवाई में सीईओ जिला पंचायत ने सुनी 120 आवेदकों की समस्याएं निराकरण के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जनसुनवाई में अपर कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज द्वारा जिले के दूरस्थ एवं ग्रामीण अंचलों से आए 120 आवेदकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर शिकायत की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की गई तथा उसके निराकरण के लिए निर्देश दिए गए। अपर कलेक्टर ने सभी विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया है कि जिन आवेदन पत्रों में समय सीमा निर्धारित किया जाता है उसको तत्काल विभाग प्रमुख अपने संज्ञान में लेकर निराकरण कर संबंधित हितग्राही को सूचित करे।

अपर कलेक्टर ने जनसुनवाई में प्राप्त होने वाले आवेदनों पर पूरी संवेदनशीलता के साथ कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं। जनसुनवाई में हितग्राहीमूलक योजनाओं से संबंधित समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए उन्होंने सभी विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया है कि योजनाओं के क्रियान्वयन की प्रत्येक स्तर पर नियमित समीक्षा की जाए। योजनाओं के क्रियान्वयन में आ रही कठिनाइयों की पहचान करें तथा उनका समाधान करते हुए प्रत्येक हितग्राही को पात्रतानुसार लाभान्वित किया जाना सुनिश्चित करें। अपर कलेक्टर ने कहा कि शासन द्वारा लोगों की समस्या के त्वरित निराकरण करने की मंशा से जनसुनवाई का आयोजन किया जाता है।

बोलेरो ने बाइक को मारी टक्कर

3 लोग घायल, 1 की हालत गंभीर, जिला ट्रामा सेंटर रेफर, चालक फरार

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली के सरई थाना क्षेत्र में आने वाले इटमा तिराहे के पास सोमवार और मंगलवार की दरमियानी रात एक अनियंत्रित बोलेरो चालक ने बाइक सवार युवकों को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर की वजह से बाइक सवार तीनों युवक कई फीट दूर जाकर गिरे और गंभीर रूप से घायल हो गए।

घायलों को निजी वाहन से सरई स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया: स्थानीय लोगों ने निजी वाहन की मदद से सभी घायलों को इलाज के लिए सरई के स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती करवाया गया है। घटना के बाद बोलेरो चालक गाड़ी छोड़कर मौके से फरार हो गया है। सरई इलाके के स्थानीय भाजपा नेता संतोष कुमार जायसवाल ने बताया कि हादसा रात तकरीबन 12 बजे हुआ मैं खुद फोन करके कई बार थाने में सूचना दी लेकिन पुलिस नहीं आई।

खाली बोलेरो को पुलिस ने थाने ले जाया: उसके बाद डायल 100 को फोन किया गया तो वह भी आधे घंटे इंतजार करने के बाद भी मौके पर नहीं पहुंची। जिसके बाद निजी वाहन से सभी घायलों को अस्पताल भिजवाया गया। लगभग 1 घंटे बाद सरई पुलिस मौके पर पहुंची तब तक बोलेरो चालक गाड़ी छोड़कर भाग चुका था।

पुलिस बोलेरो को लेकर थाने चली गई है, सभी घायलों का इलाज चल रहा है और सभी घायल इटमा इलाके के बताए जा रहे हैं। घायलों में एक की हालत गंभीर है, जिसे जिला मुख्यालय के ट्रामा सेंटर पर रेफर किया जा रहा है। हादसे की वजह अनियंत्रित गति बताई जा रही है।

दहेज हत्या में पति को 10 साल की जेल

अनूपपुर कोर्ट ने सुनाई सजा, 10 हजार रुपए जुर्माना भी लगाया

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर के सत्र न्यायाधीश नरेंद्र पटेल की अदालत ने दहेज हत्या के मामले में आरोपी पति चंदन चौधरी को दोषी पाते हुए 10 साल जेल और 10 हजार रुपए जुर्माना की सजा सुनाई है। जानकारी के अनुसार, चंदन चौधरी ने शादी के एक साल तक पत्नी अन्नू चौधरी के साथ अच्छा व्यवहार किया, लेकिन उसके बाद दहेज की मांग को लेकर उसे प्रताड़ित करने लगा। आरोपी पति ऑटो, पैसे और अन्य सामान की मांग करते हुए पत्नी को शारीरिक और मानसिक यातनाएं देता था। इतना ही नहीं, वह पत्नी के चरित्र पर भी संदेह करने लगा था।

प्रताड़ना से तंग आकर अन्नू चौधरी ने 29 मई 2022 को रात करीब 2:30 बजे अपने ससुराल में फांसी लगा ली थी। यह घटना उसकी शादी के चार साल के अंदर की है। पुलिस ने मामले की जांच के बाद आरोपी पति के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की।

न्यायालय ने विभिन्न धाराओं में अलग-अलग सजाएं सुनाई हैं। धारा 304 बी के तहत 10 साल का कारावास और 5 हजार रुपए जुर्माना, धारा 498 ए में 3 साल की सजा और 2 हजार रुपए जुर्माना तथा दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धारा 4 के तहत 2 साल की सजा और 3 हजार रुपए का जुर्माना लगाया है। फैसले के बाद आरोपी को जिला जेल अनूपपुर भेज दिया गया है। मामले में लोक अभियोजक पुष्पेंद्र कुमार मिश्रा ने शासन की ओर से पैरवी की।

प्रयागराज जाने वाले यात्री घंटों खड़े रहे

विधायक के दखल के बाद किया रवाना, रोको-टोको अभियान के तहत चल रही थी चेकिंग

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में मंगलवार शाम 5 बजे यातायात पुलिस की सख्त चेकिंग ने यात्रियों को परेशानी में डाल दिया। सागर-कानपुर नेशनल हाईवे पर ललौनी तिराहे के पास पुलिस द्वारा चलाए जा रहे 'रोको-टोको' अभियान में दो और चार पहिया वाहनों की जांच की जा रही थी, जिससे यात्रियों को घंटों तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

परेशान यात्रियों में से किसी ने इस स्थिति का वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया। वीडियो वायरल होने के बाद छतरपुर की विधायक ललिता यादव को इसकी जानकारी मिली। विधायक तुरंत मौके पर पहुंचीं और स्थिति का जायजा लिया।

पुलिस को सहयोगात्मक रवैया अपनाना चाहिए

विधायक ने यातायात पुलिस को समझाते हुए कहा कि एक तरफ लोग प्रयागराज जाने वाले यात्रियों की मदद कर रहे हैं, उन्हें भोजन-पानी की सुविधा दे रहे हैं, ऐसे में पुलिस को भी उनके साथ सहयोगात्मक रवैया अपनाना चाहिए। उन्होंने यात्रियों से बातचीत कर उनकी समस्याएं भी सुनीं।

यातायात प्रभारी बृहस्पति साकेत ने स्थिति स्पष्ट करते हुए बताया कि नियमित चेकिंग अभियान के तहत कार्रवाई की जा रही थी। विधायक के निर्देश के बाद यात्रियों को बिना परेशानी के आगे बढ़ने दिया गया।

उड़ैसा सचिव सुनील सिंह निलंबित, मारपीट के आरोप में की गई कार्यवाही

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जनपद पंचायत सीधी अंतर्गत ग्राम पंचायत उड़ैसा में पदस्थ सचिव सुनील सिंह को निलंबित कर दिया गया है उनके ऊपर यह कार्यवाही मारपीट की घटना में संलिप्ट पाए जाने के कारण की गई है।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सीधी द्वारा जारी आदेश क्रमांक 566/सचिव स्थापना/ जिला पंचायत/ 2025 दिनांक 22/01/2025 में आदेशित किया गया है कि ग्राम पंचायत उड़ैसा में पदस्थ सचिव सुनील सिंह चौहान द्वारा दिनांक 20 जनवरी 2025 को प्रकाशित खबर के मुताबिक मारपीट की घटना को अंजाम दिया गया था जिसके विरुद्ध जमोडी थाने में दर्ज प्रकरण क्रमांक 43/25 के अंतर्गत धारा 296, 115(2),351(2),351(3), भारतीय न्याय संहिता के तहत अपराध पंजीबद्ध कर उसे गिरफ्तार कर तहसीलदार के समक्ष पेश किया गया था जहां से जेल भेज दिया गया था।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि पंचायत सचिव का यह कार्य कर्तव्य निष्ठा के प्रति प्रतिकूल व दंडनीय अपराध है इसलिए मध्य प्रदेश पंचायत सेवा नियम 2011 के नियम 7 के प्रावधानों के तहत ग्राम पंचायत उड़ैसा तथा अतिरिक्त प्रभार ग्राम पंचायत कोचिला के सचिव सुनील सिंह को निलंबित कर जनपद पंचायत सीधी में अटैच किया गया है। उल्लेखनीय कि पंचायत सचिव द्वारा गोपाल दास मंदिर के पास आदित्य पति त्रिपाठी के साथ दिनांक 20 जनवरी 2025 को अपने साथियों के साथ मिलकर गंभीर रूप से मारपीट की गई थी जिसका वीडियो भी सामने आया है।

पुलिस तथा स्टेट बैंक ऑफइंडिया द्वारा सायबर धोखाधड़ी के विषय में किया गया जागरूक

जागरूकता से ही सायबर अपराधों से बचाव संभव : पुलिस अधीक्षक

पुलिस अधीक्षक ने प्रचार रथ को झण्डी दिखाकर किया रवाना

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। आम लोगों को सायबर धोखाधड़ी एवं अपराधों से बचाने के लिए पुलिस विभाग तथा भारतीय स्टेट बैंक द्वारा संयुक्त रूप से जनजागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। जागरूकता अभियान में लोगों को सायबर क्राइम डिजिटल अरेस्ट, आधार वेरीफिक्रेशन, लोन का दावा, ईनाम का लालच, पुलिस अरेस्ट की धमकी, बैंक की ओटीपी, ईमेल पर लिंक वेरीफिक्रेशन, फेसबुक हैक होना, रूपये डालने का लालच, निवेश टिप्स, वीडियो कॉल से फ्रॉड के संबंध में तथा बचाव के तरीकों के विषय में विस्तार से जानकारी दी गई। सीधी जिले में भारतीय स्टेट बैंक की मुख्य शाखा में पुलिस अधीक्षक डॉ. रविन्द्र वर्मा के मुख्य आतिथ्य में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ने झण्डी दिखाकर प्रचार रथ को रवाना किया। कार्यक्रम में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से भी लोगों को जागरूक किया गया।

पुलिस अधीक्षक डॉ रवीन्द्र वर्मा ने कहा कि वर्तमान समय में सायबर अपराध पुलिस के लिए सबसे बड़ी चुनौती के रूप में उभरा है। जन जागरूकता के माध्यम से ही इससे बचाव संभव है। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ दशकों में डिजिटल तकनीकी को तेजी से विस्तार हुआ है। इसके साथ ही एक समानान्तर डिजिटल वर्ल्ड भी विकसित हुआ है। जहाँ एक ओर तकनीकी ने हमारी जिन्दगी को आसान किया है उसी के साथ नए खतरे भी उत्पन्न हुए है। सायबर अपराधों मे अपराधियों की पहचान करना एक चुनौती भरा काम है। पीड़ित व्यक्तियों को भी यह जानने में समय लग जाता है कि उनके साथ अपराध घटित हुआ । कई मामलों में अपराधी दूसरे राज्यों और दूसरे देश से इस घटना को अंजाम देते हैं, इसलिए हमको हर समय सचेत रहने की आवश्यकता है।

हेल्पलाइन 1930 एवं एनसीआरपी पोर्टल पर करें शिकायत: पुलिस अधीक्षक ने कहा कि अपराधी हमारे डर और लालच का फायदा उठाकर हमारे साथ धोखाधड़ी करते हैं जिसके कारण पीड़ित को आर्थिक तथा मानसिक क्षति होती है। उन्होंने कहा कि जैसे ही यह आभास हो कि आपके साथ कोई सायबर अपराध हो गया है तत्काल इसकी शिकायत सायबर हेल्पलाइन नं. 1930 एवं एनसीआरपी पोर्टल पर दर्ज करायें। साथ ही अपने नजदीकी थाने या सायबर सेल पुलिस अधीक्षक कार्यालय में भी संपर्क करें। आप जितनी जल्दी शिकायत दर्ज करायेंगे अपराधियों को पकड़ने में उतना ही सहायक होगा। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि इसमें बैंकों की जिम्मेदारी भी महत्वपूर्ण है। सायबर धोखाघड़ी के मामलों में बैंक पुलिस को पूरा सहयोग करें जिससे पीड़ित व्यक्ति को राहत मिल सके।

प्रधान शाखा प्रबंधक भारतीय स्टेट बैंक प्रतिमान मिश्रा ने बताया कि भारतीय स्टेट बैंक द्वारा पुलिस के साथ मिलकर उपभोक्ताओं के बचाव के लिए यह जन जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। बैंक द्वारा कभी भी फोन के माध्यम से ओटीपी या अन्य संवेदनशील जानकारी नहीं मांगी जाती है। न ही फोन के माध्यम से लोन या अन्य सुविधाएं दी जाती है। ऐसे फोन से अत्यन्त सतर्क रहने की आवश्यकता है। इस प्रकार के कार्यों के लिए बैंक शाखा से संपर्क करें। उन्होंने कहा कि भारतीय स्टेट बैंक ने अपने ग्राहकों के लिए 18001109 टोल फ्री नम्बर की सुविधा दी है। सायबर धोखाधड़ी होने पर उक्त नम्बर में शिकायत अवश्य दर्ज करायें।

सहायक संचालक जनसंपर्क विभाग मुकेश मिश्रा ने कहा कि सायबर अपराधों से बचाव के लिए हमें हर समय सतर्क और सचेत रहने की आवश्यकता है। हमारी थोड़ी सी असावधानी हमारे लिए घातक हो सकती है। किसी भी अनजान नम्बर का वाट्सएप वीडियो काल या काल नहीं सुने। स्वयं भी जागरूक हों तथा अन्य लोगो को भी जागरूक करें। कार्यक्रम में सायबर सेल प्रभारी प्रदीप मिश्रा द्वारा महत्वपूर्ण जानकारी दी गई।

जिला पंचायत में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से किया गया जागरूक: इसके पश्चात् प्रधान प्रबंधक प्रतिमान मिश्रा के नेतृत्व में जिला पंचायत सभागार में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को नुक्कड़ नाटक के माध्यम से सायबर अपराधों के विषय में जागरूक किया गया।

कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा, जिला- रीवा (म.प्र.)

//निविदा सूचना //

क्रमांक-423/ई-टेंडर/न.पा.नि./2025 रीवा, दिनांक 27.01.2025

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रर्यकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑनलाईन निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट https://mptenders.gov.in पर देखा जा सकता है।

क्र.	टेण्डर क्रमांक एवं जारी दिनांक तथा NIT क्रमांक/दिनांक	कार्य का नाम	कार्य की समयावधि एवं लागत	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविदा की अंतिम तिथि
1	2	3	4	5	6
1.	2025_UAD_398782_1 28.01.2025 [FRIST CALL] 416/27.01.2025	जोन क्रमांक-01 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-38 में चुनहाई कुआं से रानी तालाब मंदिर मोड़ तक पेवर ब्लाक लगाने एवं आरसीसी पुलिया निर्माण का कार्य।	04 माह ₹ 33.65 लाख	₹ 5000.00 ₹ 25238.00	28.02.2025 18:00 बजे तक।
2.	2025_UAD_398783_1 28.01.2025 [FRIST CALL] 417/27.01.2025	जोन क्रमांक-03 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-10 में इंडियन एक्सीलेंस स्कूल के सामने CC सड़क निर्माण का कार्य।	03 माह ₹ 16.55 लाख	₹ 2000.00 ₹12413.00	28.02.2025 18:00 बजे तक।
3.	2025_UAD_398784_1 28.01.2025 [FRIST CALL] 418/27.01.2025	जोन क्रमांक-03 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-13, श्री पिल्लई के घर से श्री खत्री के घर तक, श्री खरे के घर से श्री शैलेश द्विवेदी के घर तक एवं श्री कौशल सिंह के घर से श्री जवाहर सिंह के घर तक आरसीसी नाली निर्माण का कार्य।	04 माह ₹ 25.09 लाख	₹ 5000.00 ₹ 18818.00	28.02.2025 18:00 बजे तक।
4.	2025_UAD_398785_1 28.01.2025 [FRIST CALL] 419/27.01.2025	जोन क्रमांक-03 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-14 में हरिजन बस्ती में स्व. छोटकइया साकेत घर से श्री भारत चौधरी के घर तक RCC नाली निर्माण का कार्य।	03 माह ₹ 13.84 लाख	₹ 2000.00 ₹10380.00	28.02.2025 18:00 बजे तक।
5.	2025_UAD_398786_1 28.01.2025 [FRIST CALL] 420/27.01.2025	जोन क्रमांक-03 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-15 में एन.एच. 7 शिव प्रसाद मोड़ से किशोर बाल न्यायालय होकर श्री रमेश दूबे के घर तक सीमेंट कंक्रीट सड़क मजबुतीकरण का कार्य।	04 माह ₹ 36.51 लाख	₹ 5000.00 ₹27383.00	28.02.2025 18:00 बजे तक।
6.	2025_UAD_398787_1 28.01.2025 [FRIST CALL] 421/27.01.2025	जोन क्रमांक-03 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-16 में आदर्श नगर में शिवशरण बघेल के घर से श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह के घर होते हुए श्री लक्ष्मी नारायण गुप्ता के घर के पास सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट विवेकानन्द नगर तक RCC सड़क निर्माण का कार्य।	04 माह ₹ 27.79 लाख	₹5000.00 ₹20843.00	28.02.2025 18:00 बजे तक।
7.	2025_UAD_398788_1 28.01.2025 [FRIST CALL] 422/27.01.2025	जोन क्रमांक-03 अंतर्गत वार्ड क्रमांक-24 में चौरसिया नर्सिंग होम के पास श्री विजय सिंह के घर से डा. कमलेन्द्र सिंह के घर तक आरसीसी सड़क एवं नाली निर्माण का कार्य।	04 माह ₹ 25.33 लाख	₹5000.00 ₹18998.00	28.02.2025 18:00 बजे तक।

नोट: - निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार का संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन https://mptenders.gov.in की वेबसाइट पर ही किया जायेगा, पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

कार्यपालन यंत्री (जोन क्र. 01व 03)
नगर पालिक निगम रीवा (म.प्र.)

विचार

नक्सलियों के खिलाफ चल रही निर्णायक मुहिम के मिलने लगे हैं बेहतर नतीजे

आमतौर पर नक्सली, आतंकवादी और अंडरवर्ल्ड के मास्टरमाइंड अपने पूरे जमात के साथ भारतीय गणतंत्र के लिए चुनौती समझे जाते हैं। इसलिए सुरक्षाबलों ने 76वें गणतंत्र दिवस से महज कुछ दिन पहले नक्सलियों के खिलाफ जो निर्णायक कार्रवाई करते हुए अंतरराज्यीय ऑपरेशन चलाए हैं और एक दर्जन से ज्यादा नक्सलियों को मुठभेड़ में मार गिराया है, वह तिरंगे और संवैधानिक गणतांत्रिक व्यवस्था को सच्ची सलामी है। इसलिए देशवासियों की अपेक्षा है कि सुरक्षा बलों की यह कार्रवाई और अधिक तेज होनी चाहिए, क्योंकि ऐसा करके ही हम उनके नापाक हौसले को तोड़ सकते हैं। देखा जाए तो चाहे अंतर्राष्ट्रीय थल या समुद्री सीमा से सटे प्रदेश हों या हमारे आंतरिक प्रदेश, यहां पर नक्सलियों, आतंकवादियों और अंडरवर्ल्ड सरगनाओं की मौजूदगी और उनके मार्फ़त जब-तब होते रहने वाली हिंसात्मक घटनाएं एक ओर जहां शासन व्यवस्था और अमनपसंद लोगों को मुंह चिढ़ाती हैं, वहीं दूसरी ओर धनी लोगों के भयादोहन का कारण भी बनती हैं। चूंकि अवैध मानव व वस्तु तस्करी, ड्रग्स सिंडिकेट, अवैध हथियारों के कारोबार, फिरौती, विवादास्पद सम्पत्तियों की खरीद-फरोख्त आदि से इनके तार जुड़े होते हैं, इसलिए सफेदपोश नेताओं-समाजसेवियों-कथित अधिकारियों-उद्योगपतियों आदि के माध्यम से इनके सरगना भी परस्पर मिले हुए होते हैं। आम धारणा रही है कि इनके खिलाफ निर्णायक कार्रवाई इसलिए भी नहीं हो पाती है, क्योंकि क्षेत्रीय दलों और स्थानीय नेताओं से इनकी गुप्त सांठगांठ रहती है! और यही इनके तार कथित राष्ट्रीय नेताओं और अर्बन नक्सलियों-अपराधियों-आतंकवादियों के सिंडिकेट तक से जोड़ते हैं। यही वजह है कि प्रशासन भी सियासी कारणों के चलते इनके खिलाफ निर्णायक कार्रवाई नहीं कर पाता है। वहीं, जम्मू-कश्मीर, पंजाब से लेकर उत्तर-पूर्वी राज्यों की आतंकी घटनाएं हों, या झारखंड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र व बिहार की नक्सली घटनाएं, या फिर बड़े महानगरों से लेकर जिलास्तरीय शहरों की अंडरवर्ल्ड वारदातें, इनके तार परस्पर जुड़े बताए जाते हैं। कहना न होगा कि इनमें से कई राज्यों में क्षेत्रीय दलों की मजबूती के पीछे भी इनकी राष्ट्रविरोधी सोच होती हैं, जिन्हें बरास्ता नेपाल, पाकिस्तान व चीन का भी संरक्षण हासिल होता है। वहीं, कांग्रेस समेत कई बड़े क्षेत्रीय दल भी इनके नेक्सस के समक्ष घुटने टेक चुके हैं। जबकि इन सभी बातों से उलट केंद्र में सत्तारूढ़ राष्ट्रवादी भाजपा नीत एनडीए की सरकार और उड़ीसा-छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र की भाजपा प्रदेश सरकारों की संगठित अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति से प्रोत्साहित होकर सुरक्षा बलों ने स्थानीय पुलिस के साथ संयुक्त रणनीति बनाकर नक्सलियों-दुर्दांत अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का जो बीड़ा उठाया है, उसकी एक झलक ताजा कार्रवाई से मिलती है।

गौरतलब है कि भारत में नक्सलवाद के खिलाफ चल रहे अभियान को एक और बड़ी सफलता तब मिली, जब गत दिनों ओडिशा और छत्तीसगढ़ के बॉर्डर क्षेत्र में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल छत्तीसगढ़ के एसओजी (स्पेशल ऑपरेशंस ग्रुप) और ओडिशा पुलिस के ज्वाइंट ऑपरेशन के दौरान 14 नक्सलियों को मार गिराया गया।

कांग्रेस की विभाजनकारी राहों से जुड़े खतरे

ललित गर्ग

कांग्रेस पार्टी की नीति हमेशा से विभाजनकारी रही है। इनका एजेंडा ही रहा है देश में जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के नाम पर बंटवारा करके अराजकता का माहौल बनाना। इसके लिये वह कभी संविधान को खतरे में बताती है तो कभी जातिगत जनगणना की मांग करती है। एक बार फिर डॉ. भीमराव आंबेडकर की जन्मस्थली महू में रैली के दौरान कांग्रेस ने जिस तरह इस पर जोर दिया कि संविधान पर हमला किया जा रहा है और महात्मा गांधी का अपमान किया जा रहा है, उससे उसकी विचारशून्यता एवं राजनीति अपरिप[ता ही प्रकट नहीं हो रही है,, बल्कि देश को बांटने की मानसिकता भी उजागर हो रही है।

यदि कांग्रेस के रणनीतिकार एवं नेता यह समझ रहे हैं कि वे संविधान के संदर्भ में भय का भूत खड़ा करने और भाजपा एवं संघ के नेताओं के बयानों को तोड़-मरोड़कर पेश करने से देश की जनता को गुमराह करने, बरगलाने में समर्थ हो जाएंगे तो ऐसा अब होने वाला नहीं है। उलटे इस क्रम में कांग्रेस की विश्वसनीयता और अधिक गिर सकती रही है और वह हास्यास्पद स्थिति का शिकार होकर अपनी राजनीतिक जमीन को कमजोर ही कर रही है। ऐसा हरियाणा, महाराष्ट्र के चुनावों में हुआ है और अब दिल्ली के विधानसभा चुनाव भी ऐसे ही होते हुए दिख रहे हैं।

संविधान के खतरे में होने के कांग्रेस के दुष्प्रचार का लाभ भले ही कुछ सीमा तक लोकसभा चुनाव मिला हो, लेकिन हर बार मतदाता ऐसे नारों एवं दुष्प्रचार में गुमराह नहीं होने वाला है। वैसे भी काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती। कांग्रेस इस बात को भी तूल दे रही है कि महात्मा गांधी के साथ डॉ. आंबेडकर का अपमान किया जा रहा है। ये ऐसी बातें हैं, जिनका कोई मूल्य-महत्व नहीं। यह सब अंधेरे में तीर चलाने जैसा है। यह असत्य एवं झूठ की राजनीति है। कांग्रेस भले ही सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने की बातें कर रही हो, लेकिन सच यह है कि वह सामाजिक विभाजन की खाई को चैड़ा करते हुए देश को जोड़ने नहीं, बल्कि तोड़ने में जुटी हुई है। अब मतदाता समझदार हो चुका है, वह ऐसे झूठे प्रचार में बार-बार नहीं आने वाला है। कांग्रेस सामाजिक न्याय की बात करते हुए भाजपा के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को भी निशाने पर ले रही है, लेकिन कांग्रेस की इन कुचालों का भाजपा एवं आरएसएस करारा जबाव दे रहे हैं।

गत दिवस ही संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कांग्रेस एवं उसके नेता राहुल गांधी को नसीहत देते हुए कहा- बंधुभाव ही असली धर्म है। यही बात डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने संविधान-प्रस्तुति के समय अपने भाषण में भी समझाई है। भागवत ने कहा- समाज आपसी सद्भावना के आधार पर काम करता है। इसलिए मतभेदों का सम्मान किया जाना चाहिए। प्रकृति भी हमें विविधता देती है। वे विविधता को जीवन का हिस्सा मानते हैं। उन्होंने कहा कि आपकी अपनी विशेषताएं हो सकती हैं, लेकिन आपको एक-दूसरे के प्रति अच्छा व्यवहार करना चाहिए। अगर आप जीना चाहते हैं, तो आपको एक साथ रहना चाहिए। लेकिन कांग्रेस वर्तमान में ही नहीं, बल्कि अतीत में भी विभाजनकारी नीति को बल देते हुए भारतीय इंसानों को बांटती रही है। गांधीजी ने आजादी के बाद ही यह बात समझ ली थी। इसीलिए गांधीजी ने कहा था कि कांग्रेस को खत्म कर देना चाहिए। लेकिन कांग्रेस गांधी के अनुसार तो खत्म नहीं हुई लेकिन देश में विभाजनकारी नीति के कारण जनता द्वारा नकारी जा रही है, खत्म होने के कगार पर पहुंच रही है।

कांग्रेस भारत की 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' की भावना को दबा रही है, सनातन परंपरा को दबा रही है। अनेक वर्षों तक दिल्ली पर राज करने वाली कांग्रेस सत्ता में वापस आने के लिए इतनी बेचैन है कि वो हर दिन नफरत, द्वेष एवं घृणा की राजनीति कर रही है। कांग्रेस सांप्रदायिकता और जातिवाद के विष को दिल्ली चुनाव में भी उडेल रही है। हिंदू समाज को तोड़ना और उसे अपनी जीत का फॉर्मूला बनाना ही कांग्रेस की राजनीति का आधार है और यही उसको रसातल में ले जा रहा है। कांग्रेस की जातिगत जणगणना की मांग भी उसकी विभाजनकारी नीति को ही दर्शाती है। मोदी सरकार जनगणना कराने की तैयारी कर रही है। सरकार के सामने समस्या केवल यह नहीं है कि जनगणना शीघ्र कराई जाए बल्कि मूल समस्या यह है कि कांग्रेस की जाति आधारित जनगणना की मांग का सामना कैसे किया जाए। विपक्षी दल और विशेष रूप से कांग्रेस जातिगत जनगणना पर जोर दे रही है, जो केवल संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के इरादे से की जा रही है। जातिगत जनगणना का उद्देश्य समाज को चुनावी लाभ के लिए जातियों में गोलबंद करना और जातिगत आरक्षण को तूल देकर वोटबैंक की राजनीति को धार देना है। इसकी पुष्टि विपक्षी नेताओं और विशेष रूप से राहुल गांधी के ऐसे बयानों से होती है कि अमुक-अमुक जाति के लोगों को दबाया जा रहा है। यह और कुछ नहीं, समाज को जानबूझकर बांटने की घातक चेष्टा है।

यह सही है कि भारतीय समाज जातियों में विभाजित रहा है, लेकिन अब जब यह विभाजन लगातार कम होता जा रहा है, तब जाति जनगणना कराकर जाति की राजनीति करने वालों को सामाजिक विभाजन का अवसर नहीं दिया जाना चाहिए। क्योंकि यह जातीय वैमनस्य को ही हवा देगा और इससे विभाजनकारी प्रवृत्तियों के सिर उठाने का ही खतरा है। जातिगत जनगणना बेहद जटिल होने के साथ विभाजनकारी भी है। यही कारण है कि 2011 में मनमोहन सरकार ने जाति जनगणना कराने के बाद भी उसके आंकड़े सार्वजनिक करना सही नहीं समझा था। क्योंकि कई ऐसी जातियां हैं, जिनकी एक राज्य में सामाजिक और आर्थिक हैसियत दूसरे राज्य से बिल्कुल भिन्न है। इतना ही नहीं, कहीं उनकी गिनती अनुसूचित जाति में होती है तो कहीं पिछड़ी जाति में। जाति जनगणना के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि पिछड़ेपन का एकमात्र आधार जाति है। एक समय ऐसा था, लेकिन अब हालात बदल चुके हैं। आज शहरों में किसी को इससे मतलब नहीं कि कौन किस जाति का है। जाति जनगणना कराने का मतलब होगा देश को फिर से जातीय विभाजन की ओर ले जाना। इससे बचने में ही समझदारी है।

कांग्रेस एवं विपक्षी दलों का मोदी और भाजपा के विरोध के अलावा कोई साझा उद्देश्य नहीं है, उलटे उनमें दलगत हितों और महत्वाकांक्षाओं का तल्ख टकराव है। दो लोकसभा चुनावों में हाशिये पर रहे विपक्षी दल तीसरे चुनाव के लिए एक साथ तो आए, पर मकसद पूरा न होने पर वापस अपनी-अपनी राह चलने को बेताब हैं। लोकसभा चुनाव में भी बंगाल, केरल और पंजाब में मित्र दल आपस में ही जोर आजमाइश कर रहे थे। अब दिल्ली में भी कांग्रेस और आप अलग-अलग ताल ठोंकते दिख रहे हैं। दिल्ली में कांग्रेस के तेवरों से साफ है कि मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने से रोकने में नाकामी के बाद उसने शायद अपने पुनरुत्थान के लिये दिल्ली के चुनाव को आधार बना लिया है। इसमें कोई बुराई नहीं, पर यह काम आसान नहीं। दशकों तक देश और प्रदेशों पर एकछत्र राज करने वाली कांग्रेस की दुर्दशा अचानक नहीं हुई। बेशक उसका ऐतिहासिक चुनावी पराभव 2014 में हुआ, लेकिन अपनी कमजोरियों-गलतियों एवं विभाजनकारी नीतियों से वह बहुत पहले से जर्जर होने लगी थी। कांग्रेस न केवल खुद को बल्कि इंडिया गठबंधन को भी जर्जर बना दिया है, गठबंधन का स्लोगन था, जुड़ेगा भारत, जीतेगा इंडिया, लेकिन देश को दिखाए गए उन सपनों का सच डेढ़ साल में सामने आ गया। तनातनी पहले भी दिखती रही, लेकिन दिल्ली विधानसभा चुनाव में बात आर-पार तक पहुंच गई। यह एक पुरानी कहावत है कि देश जैसी सरकार के योग्य होता है, वैसी ही सरकार उसे प्राप्त होती है।' दिल्ली में भी ऐसी ही सरकार बनेगी जो दिल्ली के हितों को प्राथमिकता दे, न कि विभाजन को।

जनवरी में दीपावली मनाता जनजातीय ग्राम मेंढापानी

प्रवीण गुगनानी

भारतीय पशुधन प्रेम अद्भुत कथा है यह! सौ प्रतिशत जनजातीय एवं अनुसूचित जाति की जनसंख्या वाले मेंढापानी ग्राम (बैतूल) की यह कथा अविश्वसनीय भी है! अविश्वनीय इसलिए, कि अपने देश के जनजातीय बंधु, अपने होली-दीपावली के पर्वों से किसी प्रकार का समझौता नहीं करते। वे अपने इन उत्सवों को डूबकर, रसमय होकर मनाते हैं और इन त्योहारों को जीते हैं। ये जनजातीय त्यौहारों को स्वयं में समाहित कर लेते हैं।

वैसे तो देश भर में जनजातीय समाज का दीपावली उत्सव बड़ा ही विशिष्ट व उल्लेखनीय होता है किंतु गोंडवाना के जनजातीय समाज की दीपावली का तो कहना ही क्या!! इनके जीवन में दीपावली व होली का त्यौहार केवल आता नहीं है, आकर ठहर जाता है! इनके चौक, चौपालों, खारी, ढानी, बाजारों, टोलों, टपरों, मठ, मुठिया, मेलों, ग्रामों में और, उससे भी बढ़कर इनके हृदय में दीपावली ठहर जाती है! हाँ, ये वनवासी बंधु, त्योहारों को हृदय में धारते हैं और उसे उतार लेते हैं अपने अन्तर्तम तक। होली, दीवाली को मनस्थ और तनस्थ कर लेने का ही प्रभाव होता है कि बैतूल जिले का जनजातीय समाज एक मास तक इन त्योहारों को सतत मनाता ही रहता है। इस मध्य वह कोई काम नहीं करना चाहता। इस मध्य उसे आप कितनी भी अधिक मजदूरी का, वेतन का लालच दे दो; वह नहीं आयेगा काम पर! इनकी होली, दीवाली केवल अपने ही परिवार में, मोहल्ले में या ग्राम में नहीं मनती है। ये जनजातीय बंधु, उस क्षेत्र में स्थित प्रत्येक ग्राम में एक दूसरे के गाँव में जाकर घर में रात्रि विश्राम करके ही दीवाली मनाते हैं। सभी एक दूसरे के गाँव में जाते हैं और भव्य आतिथ्य का आनंद लेते हैं।

लगभग तीन वर्ष पूर्व कोविड महामारी के दिनों के आसपास ही भारत के कुछ प्रदेशों में पशुधन को लंपी वायरस नामक एक बीमारी ने घेर लिया था। बैतूल में भी एक सौ चौबीस ग्रामों में यह बीमारी फेल गई थी। हजारों गाय, बैल, भैंसों को लंपी वायरस ने अपना शिकार बना लिया था। इन्हीं दिनों में मेंढापनी में भी सैकड़ों गाय, बेल, भैंस आदि पशु लंपी से ग्रसित होकर गोलोकवासी हो गए थे। वह दीपावली के एन पूर्व का सितंबर का माह था; वर्ष था, 2022! मेंढापानी के निवासी अपने प्रिय पशुधन के असमय व बड़ी संख्या में निधन से इतने दुखी हुए कि इन्होंने अपने सबसे बड़े, सबसे प्रिय, सबसे सुंदर त्यौहार दीपावली को ही त्याग दिया। जब आसपास के ग्रामवासियों को यह बात पता चली तो पंचायत बैठी और पंचायत ने, शोकग्रस्त मेंढापानी वासियों से दीपावली मनाने का आग्रह किया। तब तक जनवरी, 2023 आ चुका था। इस प्रकार, अक्टूबर-नवंबर की दीपावली मेंढापानी में पहली बार जनवरी में मनाई गई। लंपी वायरस के विदा होने पर ही जनवरी, 2023 में मेंढापनी निवासियों ने दीपावली मनाई थी। अपने दिवंगत पशुधन के प्रति मेंढापानी के ग्रामीण बंधुओं का शोक यहाँ भी रुका नहीं, उन्होंने तीन वर्षों तक उनका प्रियतम दीपावली का पर्व जनवरी में मनाने का निर्णय लिया। अपने दिवंगत पशुधन के प्रति शोक प्रकट करने का उनका यह अपना तरीका था।

यह अंतिम वर्ष था जब मेंढापानी निवासियों ने दीपावली का पर्व कार्तिक मास में न मनाकर,

जनवरी में मनाया था। इस वर्ष मेंढापानी के ग्रामवासियों के आग्रह पर उनकी इस जनवरी माह वाली दीपावली में सम्मिलित होने का अवसर मुझे भी मिला। आड़ा-टेढ़ा, जैसा भी सही पर इन वनवासी बंधुओं के साथ नृत्य करने में मुझे भी बड़ा आनंद आया। मेंढापानी के निवासियों संग चाय पर चर्चा भी हुई और उनके संग सहभोज का भागी भी बना!

बड़ा ही अद्भुत, उमंग, उल्लास व उत्साह से भरा वातावरण था समूचे गाँव का। भले ही छोटे-छोटे घर-आँगन होंगे मेंढापानी के निवासियों के, किंतु उनके दिल के जैसे ही, घर में भी लोग समाते ही चले जा रहे थे। एक-एक घर में तीस-तीस चालीस-चालीस मेहमान थे। प्रत्येक घर के सामने आठ-दस बाइक्स तो अनिवार्य रूप से खड़ी ही थी। किसी भी मोटरसाइकिल पर तीन से कम लोग तो आए ही नहीं थे। फटफटी पर चार लोगों को बैठा लेना तो इन ग्रामीणों के लिए बड़ी ही सामान्य सी बात है। पूरा गांव मेले के वातावरण में, गीत, संगीत, नृत्य, चाय-पानी, भोजन के क्रम में डूबा हुआ सा और सराबोर सा झूम रहा था। बस एक कमी खल रही थी कि यहाँ वहाँ ऊँचे स्वर में बजने वाले संगीत में उनके अपने जनजातीय गीत और नृत्य ग़ायब थे। फिल्मी गीतों और डीजे के शोर ने पारंपरिक गीतों व नृत्य के स्वरों को दबा दिया था। यह दुखद लगा। शेष सभी कुछ बड़ा ही आनंदित कर देने वाला था! युवक युवतियां तो अपनी झूम में थे ही, बड़े और वृद्ध भी अपने पूरे रंग में दिख रहे थे। सभी ने एक से एक रंग बिरंगे, चटकीले रंगों वाले कपड़े पहने हुए थे। युवक-युवतियों के माथे पर डिस्को इलेक्ट्रानिक बल्बों से जलने वाले बकल झिलमिला रहे थे। इन रंगीन लाइटिंग में उनके चेहरे के साज सिंगार को और अधिक चमक और उत्साह मिल रहा था। युवक-युवतियाँ संग-संग हाथों में हाथ थामे घूम रहे थे, नाच रहे थे। निश्चित ही मेंढापानी में इस मेले के दिन पच्चीस-पचास रिश्ते तो तय हुए ही होंगे।

मुझे अपने मध्य पाकर ग्रामवासी बड़े ही प्रसन्न हुए, उन्होंने बड़े ही हृदय से स्वागत किया। मैंने भी अवसर छोड़ा नहीं और बहुतेरी बातें की। उनसे आग्रह किया कि अगले वर्ष दीपावली कार्तिक मास में ही मनाएँ और फिल्मी गानों और डीजे के स्थान पर पारंपरिक गीत व नृत्य को ही थामें रहें। गौवंश के प्रतु, पशुधन के प्रति, इन भोले भाले ग्रामीणों का प्रेम और श्रद्धा यूँ ही बनी रहे, यही कामना..

कार ने अधेड़ को मारी टक्कर, मौत

हाईवे पार करते समय हुआ हादसा, गुस्साए लोगों ने किया चक्काजाम

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर-कोरबा नेशनल हाईवे में तेज रफ्तार कार ने सड़क पार कर रहे अधेड़ को टक्कर मार दी, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इस घटना से नाराज परिजन और लोगों की भीड़ ने चक्काजाम कर दिया। इसके चलते 2 घंटे तक नेशनल हाईवे में आवागमन बाधित रहा। घटना रतनपुर थाना क्षेत्र की है।

रानीगांव निवासी सनत कुमार वैष्णव (50) सोमवार की रात करीब 8 बजे नेशनल हाईवे को पार कर रहा था। उसी समय रतनपुर से बिलासपुर तरफ आ रही तेज रफ्तार कार ने उसे टक्कर मार दी। कार की टक्कर से हवा में उछल कर वह जमीन पर गिरा। जिससे उसके सिर में गंभीर चोटें आई। इस हादसे में उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

लोगों की जुटी भीड़, हादसे के बाद भाग निकला ड्राइवर: टकराने की आवाज सुनकर आसपास खड़े लोग दौड़कर वहां पहुंचे। तब तक कार सवार लोग भाग गए थे। देखते ही देखते वहां लोगों की भीड़ जुट गई। जिसके बाद वहां सड़क जाम की स्थिति बन गई। इसके बाद आक्रोशित लोगों ने चक्काजाम कर दिया। हादसे की जानकारी मिलते ही कोनी और रतनपुर थाना प्रभारी अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने लोगों को समझाने की कोशिश की। लेकिन, ग्रामीण मृतक के परिजन को मुआवजा देने की मांग पर अड़े रहे। आखिरकार देर रात तहसीलदार मौके पर पहुंचे। उन्होंने तात्कालिक सहायता राशि दी, तब लोग शांत हुए। जिसके बाद पुलिस ने शव को उठवाकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा। पुलिस मामले में केस दर्ज कर कार चालक की तलाश कर रही है।

2 घंटे तक बाधित रहा यातायात: इस दौरान नेशनल हाईवे में भारी वाहनों की लाइन लगी रही। भीड़ किसी भी वाहन को गुजरने नहीं दे रहे थे, जिसके चलते वाहन चालकों को परेशान होना पड़ा। करीब 2 घंटे बाद जब चक्काजाम समाप्त हुआ, तब पुलिस ने वाहनों की आवाजाही शुरू कराई।

ब्लैक स्पॉट के नजदीक हुआ हादसा: घटना स्थल से 100 मीटर दूर ब्लैक स्पॉट है। ट्रैफिक नियम के तहत तीन साल में लगातार 5 गंभीर हादसे हुए या फिर 10 लोगों की मौत 500 मीटर के दायरे में हुई तो उसे ब्लैक स्पॉट के दायरे में रखा जाता है। रानीगांव और मदनपुर के बीच ब्लैक स्पॉट है। यहां बीते 3 साल में कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ है।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार की मौत: सीपत थाना प्रभारी गोपाल सतपथी ने बताया कि खम्हरिया निवासी कलाराम खांडेकर (61) सोमवार पेट्रोल लेकर ग्राम कुली जा रहे थे। दोपहर करीब 12 बजे वे मेन रोड पर अज्ञात वाहन के ड्राइवर ने उन्हें टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

दोस्त के लिए सोना गिरवी रखकर लिया लोन

दोस्त हुआ गायब, डिप्रेशन में युवक ने फांसी लगाई, 18 फरवरी को होनी थी शादी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में दोस्त के लिए लोन की ईएमआई न चुका पाने की वजह से एक युवक ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। दीनू ने इस लोन के लिए अपना सोना भी गिरवी रखा था। मृतक युवक की 18 फरवरी को शादी होने वाली थी। पुलिस मामले की जांच कर रही है और आत्महत्या के कारणों का पता लगाने में जुटी है। यह मामला कोतवाली थाने के कतियापारा इलाके का है।

घटना की जानकारी के अनुसार, 29 वर्षीय विजय कश्यप उर्फ दीनू कतियापारा मोहल्ले में अपने चार भाइयों के साथ रहता था। दीनू भाइयों में सबसे छोटा था। उसका फूलों का छोटा सा बिजनेस था। देवांगन हॉस्टल के संचालक पुष्पेंद्र देवांगन दीनू का दोस्त था। पुष्पेंद्र को पैसों की जरूरत थी। इसे लेकर पुष्पेंद्र ने दीनू से इस बात की चर्चा की।

दोस्त की मदद के लिए ऐप से लिया था लोन: इस पर दीनू ने दोस्त पुष्पेंद्र की मदद के लिए एक ऐप से लोन लिया। लोन कंपनी से करार के मुताबिक दीनू को हर दिन ईएमआई चुकानी थी। उसने इस लोन के लिए अपना सोना भी गिरवी रखा था।

इसी बीच पुष्पेंद्र गायब हो गया। पुष्पेंद्र का दो महीनों से कोई अतापता नहीं चला। जिससे पूरी ईएमआई का बोझ दीनू पर आ गया, इससे उसकी टेंशन बढ़ती चली गई। रोजाना ईएमआई चुकाना उनके लिए मुश्किल हो गया था।

डिप्रेशन में था दीनू: इस दबाव और अगले महीने होने वाली शादी की जिम्मेदारियों की वजह से वह डिप्रेशन में चला गया। सोमवार की रात को उसने घर के बाहर पेड़ पर फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली।

युवक की 18 फरवरी को होने वाली थी शादी: पुलिस की पूछताछ में आस-पड़ोस के लोगों ने बताया कि दीनू की जिस लड़की से शादी होने वाली थी, उसका उससे पहले से अफेयर चल रहा था और वो लिव-इन में रहती थी। बतादें कि युवक की इसी लड़की से 18 फरवरी को शादी होने वाली थी।

कोतवाली थाने के टीआई विवेक पांडेय के अनुसार, घटना सोमवार रात 11 बजे से मंगलवार सुबह 5 बजे के बीच की है। मृतक के पास से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस मामले की गहन जांच कर रही है और आत्महत्या के कारणों का पता लगाने में जुटी है।

नगरीय निकाय आम निर्वाचन 2025 हेतु प्रेक्षक नियुक्त

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। जिले के नगरपालिका निगम चिरमिरी, नगरपालिका परिषद् मनेंद्रगढ़, नगर पंचायत झगराखांड, नगर पंचायत नई लेदरी, नगर पंचायत खोंगापानी तथा नगर पंचायत जनकपुर नगरीय निकाय आम निर्वाचन 2025 हेतु दुष्यंत कुमार रायस्त अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी सूडा को प्रेक्षक नियुक्त किया गया है। प्रेक्षक के निर्वाचन क्षेत्र में भ्रमण और निरीक्षण के दौरान लक्ष्मी ठाकुर अनुविभागीय अधिकारी (फारेस्ट), सतीश रवि उप अभियंत नगरपालिका निमग चिरमिरी तथा अमजद खान स.रा.निरी. न.पा.परि. मनेंद्रगढ़ को लाइजनिंग अधिकारी नियुक्त किया गया है। इनका स्थानीय पता रेस्ट हाउस, लोक निर्माण विभाग मनेंद्रगढ़ होगा। इनका सम्पर्क नंबर 9752562520 तथा 9479010235 है।

निर्माणाधीन भवन की छत गिरी, 4 घायल, ढलाई के दौरान वाइब्रेटर चलाने से सेंट्रिंग की बल्ली टूटी, मजदूर अस्पताल में भर्ती

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में इंडस्ट्रियल एरिया में निर्माणाधीन भवन की छत ढलाई के दौरान भरभरा कर गिर गई। छत पर काम कर रहे मजदूर नीचे दब गए। इस हादसे में 4 लोगों को गंभीर चोट आई है। जिन्हें इलाज के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना सिरगिट्टी थाना क्षेत्र की है। सिरगिट्टी के इंडस्ट्रियल एरिया के सेक्टर-ए में साईं बैग्स उद्योग के लिए भवन का निर्माण कराया जा रहा है। सोमवार को भवन की पहली मंजिल की ढलाई की जा रही थी। छत की ढलाई के दौरान मिस्त्री वाइब्रेटर चला रहे थे।

दोपहर साढ़े 3 बजे करीब ढलाई के लिए मटेरियल डालने के बाद मिक्चर वाइब्रेटर चलाते समय अचानक सेंट्रिंग प्लेट के नीचे खड़ी बल्ली टूटने से छत भरभरा कर नीचे गिर गई।

छत से नीचे गिरकर मलबे में दब गए मजदूर: जिससे ऊपर काम कर रहे मजदूर भी छत के साथ नीचे गिर गए। लोहे की जाली के कारण कुछ मजदूर बीच में अटक गए। वहीं, कुछ मजदूर नीचे मलबे में दब गए। किसी तरह सभी मजदूरों को बाहर निकाला गया। हादसे में चार मजदूरों को गंभीर चोट आई है। उन्हें इलाज के लिए तत्काल निजी अस्पताल पहुंचाया गया।

मजदूरों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायलों में राजकुमारी, मोनू ध्रुव, अशोक साहू और दुर्गेश साहू शामिल है।

मौके पर पहुंची पुलिस, जांच के बाद होगी एफआईआर: इस हादसे की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। इस दौरान वहां मौजूद लोगों से पूछताछ की गई। पुलिस का कहना है कि काम कर रहे और अस्पताल में भर्ती मजदूरों का बयान दर्ज किया जाएगा। जिसके बाद ठेकेदार और मालिक के खिलाफ केस दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

उद्योग के मालिक पर लापरवाही का आरोप: जानकारी के मुताबिक बैग उद्योग के निर्माण के दौरान साईं बैग के मालिक ने सुरक्षा मानकों का ध्यान नहीं रखा। नीचे सेंट्रिंग में कमजोर बल्लियों का इस्तेमाल किया। इसके साथ ही बिना सुरक्षा उपकरणों के मजदूरों से ऊंचे स्थान पर काम करा रहा था, जिसके कारण हादसे के दौरान मजदूरों को को चोटें आई।

जप्तशुदा लावारिस वाहनों की नीलामी 13 फरवरी को प्रस्तावित

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। पुलिस अधीक्षक जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर के प्रतिवेदन में दिये गये जिले के अनुभागों में "जप्तशुदा लावारिस वाहनों" की नीलामी किये जाने हेतु 13 फरवरी 2025 को समय 12:00 बजे स्थान थाना मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में किया जाना प्रस्तावित है। अतएव उक्त नीलामी प्रक्रिया में जिला स्तरीय नीलामी समिति एवं ऑफसेट मूल्य तय करने हेतु समिति के अधिकारी, कर्मचारियों को निर्देशित किया गया है।

जिसमें अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करेंगे। जिला दण्डाधिकारी एवं कलेक्टर अध्यक्ष, पुलिस अधीक्षक सदस्य, अपर कलेक्टर सदस्य, कार्यपालन अभियंता लोक निर्माण विभाग सदस्य, कार्यपालन अभियंता लोक निर्माण विभाग विद्युत एवं यांत्रिकी सदस्य, सर्व अनुविभागीय अधिकारी (रा.) सदस्य, जिला परिवहन अधिकारी नोडल अधिकारी, अनुविभागीय अधिकारी (पुलिस) सदस्य, सर्व थाना प्रभारी सदस्य, सर्व मुख्य नगर पालिका, नगर पंचायत अधिकारी सदस्य तथा मैकेनिक को सदस्य नियुक्त किया गया है। यह आदेश तत्काल प्रभावशील होगा।

युवती को रेप कर मार डाला, अर्धनग्न मिली लाश

किसी और से करती थी बात, इसलिए घोंटा गला, लड़की दोनों से रखना चाहती थी संबंध

मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के सक्ती जिले में एकतरफा प्यार में युवती की गला घोंटकर हत्या कर दी गई। 26 जनवरी को युवती की अर्धनग्न लाश मिली थी। पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए बताया कि आरोपी रेशम लाल सिदार (26) ने युवती के साथ दुष्कर्म के बाद उसकी हत्या की थी। आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

रेशम लाल को युवती का किसी और से बात करना पसंद नहीं था। इसके चलते उसने युवती के साथ पहले दुष्कर्म किया फिर उसका गला घोंट दिया। आरोपी जम्मू-कश्मीर भागने की फिराक में था, लेकिन उससे पहले ही उसे रायगढ़ से गिरफ्तार कर लिया गया। मामला सक्ती थाना क्षेत्र का है।

बाड़ी में मिली थी युवती की अर्धनग्न लाश: दरअसल, 26 जनवरी को बाड़ी में युवती का अर्धनग्न शव मिला था। जांच में पता चला कि आरोपी रेशम लाल (26), जो मृतका का पड़ोसी था, घटना के बाद से लापता था। साइबर पुलिस की मदद से पुलिस ने उसे रायगढ़ से पकड़ा। एसडीओपी मनीष कुंवर के अनुसार, आरोपी की युवती से बातचीत होती थी। 25 जनवरी की रात करीब 11 बजे वह युवती से मिलने उसके घर गया।

युवती के साथ शारीरिक संबंध बनाए: इस दौरान युवक ने युवती से जबरन शारीरिक संबंध बनाए। तभी युवती मोबाइल फोन पर अन्य युवक मुकेश से बात कर रही थी। युवती ने कहा कि जल्दी चले जाओ मुकेश आ रहा है। आरोपी ने दूसरे युवक को छोड़ने की बात कही तो युवती ने कहा तुम दोनों के साथ संबंध रखूंगी। इसके बाद आरोपी मृतका के घर की बाड़ी कूद कर जाने लगा, लेकिन जेब में रखा पैसा गिरने पर उठाने चला गया था। इस बीच फिर युवक ने युवती से जबरदस्ती शारीरिक संबंध बनाए। फिर उसने मुकेश को छोड़ने की बात कही तो दोनों के बीच विवाद हुआ।

इस पर युवती गुस्से में आकर युवक के गाल और गले को नाखून से नोचने लगी और तीन चार तमाचा मार दी। जिससे गुस्से में आकर आरोपी ने युवती का गला दबा दिया। जिससे उसकी मौत हो गई। इसके बाद आरोपी ने युवती के शव को उसके घर से लगे पड़ोसी बाबूलाल की बाड़ी में फेंक दिया। अगले दिन 26 जनवरी की सुबह युवती की अर्धनग्न लाश मिली।

परिजनों से पूछताछ में सामने आई सच्चाई: सूचना मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने छानबीन शुरू कर दी। परिजनों से पूछताछ में पता चला कि पड़ोस में रहने वाला युवक युवती से एकतरफा प्यार करता था। पुलिस ने साइबर पुलिस की मदद से आरोपी को रायगढ़ से धरदबोचा।

डर के कारण युवती की लाश को बाड़ी में फेंका: पुलिस ने मामले का खुलासा करते हुए बताया कि आरोपी ने युवती की गला घोंटकर हत्या की। इसके बाद डर से लाश को कुछ दूर बाबूलाल की बाड़ी में फेंक दिया। इतना ही नहीं आरोपी ने युवती के शव के कपड़े उतारकर उसे अर्धनग्न कर दिया और मोबाइल को छिपा दिया। पूछताछ में आरोपी ने जुर्म कबूल कर लिया है। पुलिस ने आरोपी रेशम लाल के बताए जगह से कपड़े और मोबाइल को जब्त किया है। आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

स्टेशन में बड़ा बदलाव, गेट नंबर 3 स्थाई रूप से बंद, गेट 1-2 पर ड्रॉप एंड गो शुरू, यात्रियों को मिलेंगी नई सुविधाएं

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर रेलवे स्टेशन में यात्रियों की सुविधाओं को लेकर बड़े बदलाव किए गए हैं। स्टेशन का गेट नंबर 3 स्थाई रूप से बंद कर दिया गया है। इसके बदले यात्रियों के लिए गेट नंबर 1 और 2 पर ड्रॉप एंड गो की सुविधा शुरू की गई है।

सीपीआरओ डॉ. सुस्कर विपुल विलासराव ने बताया कि गेट नंबर 4 का पहुंच मार्ग डायवर्ट कर दिया गया है और यहां आसान यू-टर्न की सुविधा दी गई है। इस गेट पर टैक्सी और ऑटो की सुविधा भी उपलब्ध है। यात्रियों की सुविधा के लिए स्टेशन एरिया में यातायात संबंधी साइनेज बोर्ड भी लगाए गए हैं।

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत होगा विकास: रेलवे प्रशासन के मुताबिक, अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत 392 करोड़ रुपए की लागत से स्टेशन का पुनर्विकास किया जा रहा है। रेलवे प्रशासन ने यात्रियों के लिए कुछ ट्रेनों में अतिरिक्त सुविधाएं भी शुरू की हैं।

एक्सप्रेस ट्रेनों में एसी कोच की सुविधा: जबलपुर-अंबिकापुर एक्सप्रेस में 28 जनवरी से और वापसी में 29 जनवरी से एक एसी-3 कोच जोड़ा जाएगा। रीवा-चिरमिरी एक्सप्रेस में 31 जनवरी से और वापसी में 1 फरवरी से एक एसी-3 और दो स्लीपर कोच की सुविधा मिलेगी। इसी तरह चिरमिरी-अनूपपुर पैसेंजर और वापसी में 1 फरवरी से एक एसी-3 और दो स्लीपर कोच की सुविधा शुरू की जा रही है। बता दें कि यात्रियों की असुविधाओं को लेकर खबर प्रकाशित की जिसके बाद रेल्वे प्रशासन ने यह कदम उठाया गया है।

ईवीएम का प्रदर्शन कर चिरमिरी एवं नई लेदरी में मतदाताओं को किया जा रहा है जागरूक

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार नगरीय निकाय आम निर्वाचन 2025 के तहत जाबो (जागव-वोटर) कार्यक्रम के तहत लोगों को मतदान की प्रक्रिया की जानकारी दी जा रही है। कार्यक्रम में ईवीएम प्रदर्शन और प्रशिक्षण मास्टर ट्रेनर्स द्वारा कराया जा रहा है।

इसी क्रम में नगर पालिका निगम चिरमिरी और नगर पंचायत नई लेदरी में ईवीएम का प्रदर्शन कर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। मास्टर ट्रेनर द्वारा ईवीएम के प्रदर्शन के दौरान मतदान प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी दी जा रही है।

लोकतंत्र के चौथे स्तंभ कहे जाने वाले पत्रकारिता ने छत्तीसगढ़ की क्षेत्रीय विकास में दिया है महत्वपूर्ण योगदान

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। भारत में हर साल 29 जनवरी को भारतीय समाचार-पत्र दिवस मनाया जाता है, जो भारतीय पत्रकारिता के गौरवशाली इतिहास और लोकतंत्र में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। यह दिन न केवल पत्रकारिता के विकास का उत्सव है, बल्कि उन संपादकों और पत्रकारों को भी याद करने का अवसर है, जिन्होंने अपने साहस, नेतृत्व और लेखनी से समाज को नई दिशा दी है। भारत में समाचार-पत्रों का इतिहास 18वीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ था। 29 जनवरी 1780 को प्रकाशित 'हिकीज़ बंगाल गजट' भारत का पहला समाचार-पत्र था, जिसे जेम्स ऑगस्टस हिकी ने शुरू किया। हिकी का यह प्रयास ब्रिटिश प्रशासन की नीतियों के विरुद्ध आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखने के लिए जाना जाता है। हालांकि यह समाचार-पत्र लंबे समय तक नहीं चल पाया, लेकिन इसने भारतीय पत्रकारिता की नींव अवश्य रखी थी। वहीं 19वीं और 20वीं शताब्दी में भारतीय समाचार-पत्रों ने स्वतंत्रता संग्राम को गति देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस दौरान कई प्रमुख संपादकों ने अपनी लेखनी से जनता को जागरूक किया। बाल गंगाधर तिलक भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में एक क्रांतिकारी संपादक के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने 'केसरी' और 'मराठा' समाचार-पत्रों का संपादन किया। इन अखबारों के माध्यम से उन्होंने स्वराज का नारा दिया और ब्रिटिश शासन की नीतियों की तीखी आलोचना की। तिलक के लेखों ने जनता को स्वतंत्रता संग्राम के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' के संपादक के रूप में समाज को सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। उन्होंने पत्रकारिता को सत्य और नैतिकता का माध्यम बनाया।

गुपचुप बेचने वाली दीदी को भाजपा ने दिया टिकट

जांजगीर-चांपा के अकलतरा में वार्ड 11 से चुनाव लड़ेंगी संतोषी, 15 साल से लगा रही ठेला

मीडिया ऑडीटर, जांजगीर-चांपा (एजेंसी)। भाजपा ने छत्तीसगढ़ नगरीय निकाय चुनाव के लिए रायगढ़ से जीवर्धन चौहान को महापौर प्रत्याशी बनाए जाने के बाद अब जांजगीर-चांपा जिले में गुपचुप बेचने वाली संतोषी कैवर्त को अपना प्रत्याशी बनाया है। संतोषी कैवर्त अकलतरा नगर पालिका के वार्ड नंबर 11 से भाजपा से पार्षद के लिए चुनाव लड़ेंगी। रायगढ़ के जीवर्धन चौहान के बाद अब 34 वर्षीय संतोषी कैवर्त की भी चारों ओर चर्चा हो रही है। संतोषी गुपचुप ठेले के दुकान से अपने घर का गुजारा चलाती हैं। वो पिछले 15 साल से बजरंग चौक के पास अपने छोटे भाई के साथ गुपचुप का ठेला लगाती हैं।

'गुपचुप वाली दीदी' के नाम से मशहूर: संतोषी ने अपने पिता रामायण कैवर्त के व्यवसाय को आगे बढ़ाया और कड़ी मेहनत से अपनी एक अलग पहचान बनाई है। शासकीय कन्या शाला उच्चतर माध्यमिक अकलतरा से 9वीं तक की पढ़ाई करने वाली संतोषी का सरल स्वभाव और मिलनसार व्यक्तित्व वार्ड के लोगों के बीच उन्हें बेहद लोकप्रिय बना चुका है। सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो के बाद से वह 'गुपचुप वाली दीदी' के नाम से मशहूर हो गई हैं।

नामांकन दाखिल करने के बाद संतोषी ने कहा कि भाजपा द्वारा एक साधारण कार्यकर्ता को इतना बड़ा अवसर देना उनके लिए गौरव की बात है। उन्होंने जनता से सेवा का मौका देने की अपील की है। संतोषी की उम्मीदवारी को लेकर पूरे प्रदेश में चर्चा हो रही है और लोग इसे समाज के हर वर्ग को समान अवसर देने की दिशा में एक सकारात्मक कदम मान रहे हैं। भाजपा ने एक बार फिर साबित किया है कि वह समाज के हर वर्ग को राजनीतिक मंच प्रदान करने में विश्वास रखती है।

ईवीएम का प्रदर्शन कर नगर पंचायतों में मतदाताओं को किया जा रहा है जागरूक

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार नगरीय निकाय आम निर्वाचन 2025 के तहत जाबो (जागव-वोटर) कार्यक्रम के तहत लोगों को मतदान की प्रक्रिया की जानकारी दी जा रही है। कार्यक्रम में ईवीएम प्रदर्शन और प्रशिक्षण मास्टर ट्रेनर्स द्वारा कराया जा रहा है।

इसी क्रम में नगर पालिका परिषद् मनेंद्रगढ़, नगर पंचायत झगराखांड में ईवीएम का प्रदर्शन कर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। मास्टर ट्रेनर द्वारा ईवीएम के प्रदर्शन के दौरान मतदान प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी दी जा रही है।

सोलापुर में जीबी सिंड्रोम के 9 नए केस, 1 मौत

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के सोलापुर में सोमवार को गुइलेन-बैरे सिंड्रोम के 9 और केस सामने आए। अब एक्टिव मरीजों की संख्या बढ़कर 110 हो गई है। स्वास्थ्य विभाग के मुताबिक इन मरीजों में 73 पुरुष और 37 महिलाएं हैं, जबकि 17 मरीज वेंटिलेटर सपोर्ट पर हैं। इससे पहले 26 जनवरी को सोलापुर के रहने वाले 40 साल के शख्स की मौत इसी जीबी सिंड्रोम के कारण हुई थी, इसकी पुष्टि राज्य के स्वास्थ्य मंत्री प्रकाश अबितकर ने भी की। सोलापुर सरकारी मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. संजीव ठाकुर के मुताबिक मरीज को सांस फूलने, निचले अंगों में कमजोरी और दस्त जैसे लक्षण थे। उसे 18 जनवरी से लगातार वेंटिलेटर सपोर्ट पर था। डीन ने बताया कि मौत के कारणों का पता लगाने के लिए क्लिनिकल पोस्टमार्टम किया गया। जिसमें वजह जीबीएस सिंड्रोम बताई गई। जांच के लिए ब्लड सैंपल नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी भेजा गया है।शहर के अलग-अलग हिस्सों से 34 वाटर सैंपल भी कैमिकल और बायोलॉजिक एनालिसिस के लिए पब्लिक हेल्थ लैब भेजे गए। इनमें से सात सैंपल में पानी के दूषित होने की सूचना मिली है। गौरतलब है कि पुणे में 9 जनवरी को अस्पताल में भर्ती मरीज ब्लड पॉजिटिव आया था, यह पहला केस था। 19 दिन में एक्टिव केस बढ़ गए हैं।

बागपत में जैन धर्म के महोत्सव में हादसा, 7 मौतें

बागपत (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बागपत में मंगलवार को जैन समुदाय के निर्वाण महोत्सव के दौरान हादसा हो गया। यहां 65 फीट ऊंचे मंच की सीढ़ियां टूट गईं। इससे कई श्रद्धालु एक दूसरे पर गिरते चले गए। भगदड़ जैसे हालात हो गए। हादसे में 7 श्रद्धालुओं की मौत हो गई। जबकि 80 से अधिक लोग घायल हो गए। गंभीर रूप से घायलों को इलाज के लिए अलग-अलग अस्पतालों में भर्ती किया गया है। स्थानीय लोगों ने घटना में खून से लथपथ श्रद्धालुओं को ठेले से अस्पताल पहुंचाया। सीएम योगी ने मामले का संज्ञान लिया। रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी भी घायलों से मिलने अस्पताल पहुंचे। हादसा बागपत शहर से 20 किमी दूर बड़ौत तहसील में सुबह 7 से 8 बजे के बीच हुआ। महोत्सव में आदिनाथ भगवान को प्रसाद चढ़ाने का कार्यक्रम चल रहा था। 65 फीट ऊंचा लकड़ी का मंच बनाया था। उस पर भगवान की 4-5 फीट ऊंची प्रतिमा रखी थी। श्रद्धालु भगवान तक पहुंचने के लिए मचाननुमा सीढ़ियों से ऊपर चढ़ रहे थे। वजन बढ़ने से पूरा मचान नीचे गिर गया।

यमुना विवाद, हरियाणा सीएम बोले- बयान पर माफी मांगें केजरीवाल

चंडीगढ़ (एजेंसी)। दिल्ली के पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल के यमुना नदी में जहर मिलाए जाने के बयान पर हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने उन्हें चुनौती दी है। सैनी ने कहा- वह अपने बयान के लिए हरियाणा और दिल्ली के लोगों से तुरंत माफी मांगें, नहीं तो हम उनके खिलाफ मानहानि का केस करेंगे। सैनी ने कहा कि हरियाणा के लोग यमुना की पूजा करते हैं। वे भला नदी के पानी में जहर क्यों मिलाएंगे। सैनी के बयान के बाद केजरीवाल ने कहा- सैनी साहब पानी के ऊपर राजनीति ना करो, पाप चढ़ेगा तुमको। लोगों की बद्दुआएं लगेंगी। केस करना है तो करो। वैसे भी कोई कसर छोड़ी है क्या? अब क्या फांसी पर चढ़ाओगे? उधर, मंगलवार को दिल्ली की ष्टरू आतिशी ने मुख्य चुनाव आयुक्त को लेटर लिखकर पानी रोकने की मांग की है।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत विश्व बन्धुत्व की भावना के साथ नई वैश्विक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। जापान ऐतिहासिक रूप में गौतम बुद्ध की परंपरा से जुड़ा है और भारत गौतम बुद्ध की धरती है। भारत और जापान का सदियों से परस्पर संबंध रहा है। प्राचीनकाल से आधुनिक युग तक जापान का समृद्ध इतिहास रहा है। विनाशकारी भूकंपों और प्राकृतिक आपदाओं से उबरने में जापान द्वारा दिखाई गई उद्यमशीलता को नमन करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इस जीवटता से जापान ने विश्व में विशेष पहचान बनाई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव जापान स्थित भारतीय दूतावास में आयोजित शो इंटरैक्टिव सेशन ऑन इनवेस्टमेंट अर्पोचुनिटीज इन मध्यप्रदेश के अवसर पर उद्योगपतियों से संवाद कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि इस यात्रा से मध्यप्रदेश-जापान की मित्रता में एक नये अध्याय की शुरुआत होगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जापान अपनी विशिष्ट जीवन शैली और औद्योगिक शैली के आधार पर आर्थिक संपन्नता में महत्वपूर्ण उपलब्धि अर्जित करने वाला देश है। प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि जापान से मध्यप्रदेश के व्यावसायिक संबंध भी जुड़े हैं। वर्ष 2023-24 में मध्यप्रदेश से जापान को 92.8 मिलियन डॉलर का निर्यात किया गया, इनमें एल्युमिनियम से बनी वस्तुएं, कार्बनिक रसायन, परमाणु रिएक्टर्स, बॉयलर्स, यांत्रिक उपकरण, फार्मास्युटिकल उत्पाद सहित अन्य मशीनरी शामिल हैं। जापान में मैन्युफैक्चरिंग और अन्य क्षेत्रों से जुड़े उद्योग भी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जापान के उद्योग समूहों को मध्यप्रदेश में निवेश के लिए आमंत्रित किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जापान में भारत के राजदूत श्री सिबी जॉर्ज का व्यवसायिक घरानों से जोड़ने के लिये निभाई गई महती भूमिका के लिये आभार माना।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 9 करोड़ से अधिक की आबादी के साथ मध्यप्रदेश क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था एक दशक में तीन गुना बढ़ी है, अर्थव्यवस्था को अगले पाँच साल में दोगुना करना हमारी सरकार का लक्ष्य है।

राहुल बोले-केजरीवाल छोटी कार से आए, लेकिन शीशमहल में रहे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने आज दिल्ली के पटपड़गंज में रैली की। इस दौरान उन्होंने कहा- अरविंद केजरीवाल जब आए थे, उनके पास छोटी सी गाड़ी थी। उन्होंने कहा था नए तरह की राजनीति करूंगा, बिजली के पोल पर चढ़ गए थे, लेकिन जब गरीबों को जरूरत पड़ी तो कहीं नहीं दिखे। राहुल ने कहा- जब दिल्ली में हिंसा हुई तो कहीं नहीं दिखे। कहा था साफ राजनीति करूंगा और सबसे बड़ा शराब घोटाला कर दिया। आपने केजरीवाल के घर की तस्वीर भी देख ली, वे शीशमहल में रहते हैं।

उन्होंने कहा कि देश में विचारधारा की लड़ाई है। एक तरफ भाजपा-आरएसएस के लोग हैं, जो देश में नफरत और हिंसा फैलाते है। दूसरी तरफ कांग्रेस पार्टी और हमारी विचारधारा है। हम लोग नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोलते हैं। हमें नफरत, डर और हिंसा वाला हिंदुस्तान नहीं चाहिए। हमें मोहब्बत की दुकान चाहिए। दिल्ली में 5 फरवरी को सभी 70 सीटों पर वोटिंग होगी। वहीं, 8 फरवरी को नतीजे घोषित किए जाएंगे। 70 विधानसभा सीटों के लिए कुल 699 उम्मीदवार मैदान में हैं।

विधानसभा का मौजूदा कार्यकाल 23 फरवरी को खत्म हो रहा है।

दिल्ली चुनाव के बीच मुख्यमंत्री आतिशी को मानहानि मामले में बड़ी राहत मिली है। राउज एवेन्यू कोर्ट ने मानहानि मामले में मजिस्ट्रेट कोर्ट से जारी समन के आदेश को रद्द किया है। ष्टरू आतिशी ने इस समन को चुनौती देते हुए राउज एवेन्यू कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दाखिल थी।

मुंबई में डीजल-पेट्रोल गाड़ियों पर बैन की तैयारी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र सरकार ने बढ़ते प्रदूषण की वजह से मुंबई महानगर पालिका क्षेत्र में डीजल-पेट्रोल गाड़ियों पर प्रतिबंध लगाने की तैयारी शुरू कर दी है। राज्य सरकार ने इसके लिए 7 सदस्यों की एक कमेटी बनाई है, जो अगले 3 महीने में अपने सुझाव सौंपेगी। 22 जनवरी को जारी आदेश के अनुसार रिटायर्ड आईएएस अधिकारी सुधीर श्रीवास्तव कमेटी को लीड करेंगे। इसमें ट्रांसपोर्ट कमिश्नर, जॉइंट पुलिस कमिश्नर ट्रैफिक, महानगर गैस लिमिटेड के एमडी, पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी के प्रोजेक्ट मैनेजर, सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स के अध्यक्ष और जॉइंट ट्रांसपोर्ट कमिश्नर सदस्य होंगे। आदेश के

मुताबिक यह कमेटी स्टडी के लिए अलग-अलग एक्सपर्ट्स को भी पैनल में शामिल कर सकेगी। मुंबई महानगर में पड़ोसी ठाणे, रायगढ़ और पालघर जिले के क्षेत्र भी शामिल हैं। यानी डीजल-पेट्रोल गाड़ियों पर प्रतिबंध को लेकर इन इलाकों में भी स्टडी होगी। कोर्ट ने बृहन्मुंबई नगर निगम और महाराष्ट्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को निर्देश दिया कि लकड़ी और कोयले का उपयोग करने वाली शहर की बेकरी निर्धारित एक साल की समय सीमा के बजाय 6 महीने में गैस या अन्य हरित ईंधन का इस्तेमाल करना शुरू करें।

दिल्ली में 4 मंजिला इमारत गिरी, 3 की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के बुराड़ी इलाके में सोमवार शाम 6.30 बजे 4 मंजिला बिल्डिंग ढह गई। घटना में 2 लड़कियों समेत 3 की मौत हो गई। लड़कियों की पहचान साधना (17) और राधिका (7) के रूप में हुई है जबकि तीसरे व्यक्ति की पहचान अभी नहीं हो पाई है। पुलिस के मुताबिक 12 लोगों को रेस्क्यू किया जा चुका है।

घायलों का इलाज जारी है। मलबे में अभी भी और लोग फंसे हो सकते हैं। दिल्ली पुलिस, फायर बिग्रेड, डीडीएमए और एनडीआरएफ की टीमें रेस्क्यू में जुटी हैं। पुलिस के मुताबिक बुराड़ी के ऑस्कर पब्लिक स्कूल के पास नई बिल्डिंग तैयार की जा रही थी। मामले की जांच शुरू कर दी है। इमारत के मालिक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा रही है।

घटना पर दिल्ली सीएम आतिशी ने एक्स पोस्ट में कहा- बुराड़ी में इमारत गिरने की घटना बेहद दुखद है। प्रभावित लोगों को हर संभव मदद मुहैया कराई जाएगी।

वहीं, भाजपा सांसद मनोज तिवारी घटनास्थल पहुंचे थे। उन्होंने कहा था कि इसमें कोई शक नहीं है कि यह बड़ी लापरवाही है। जो भी जिम्मेदार होगा, उसे बख्शा नहीं जाएगा।

उन्होंने कहा था कि इस 4 मंजिला इमारत का निर्माण पूरा हो चुका था। फिनिशिंग के लिए ब्लॉक का काम चल रहा था।

प्रयागराज जा रही अंबेडकर नगर एक्सप्रेस ट्रेन पर पथराव

छतरपुर (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के छतरपुर और हरपालपुर रेलवे स्टेशन पर बुधवार देर रात महू से प्रयागराज जा रही डॉ अंबेडकर नगर- प्रयागराज एक्सप्रेस ट्रेन पर स्थानीय यात्रियों ने हमला कर दिया। घटना देर रात करीब 1 बजे की है, जब प्लेटफॉर्म पर खड़े यात्रियों ने ट्रेन के दरवाजे नहीं खोलने पर आक्रोशित होकर पथराव और तोड़फोड़ कर दी। ट्रेन में बैठे कुछ लोगों को मामूली चोट आई है। पथराव में ट्रेन की कई बोगियों के दरवाजे और खिड़कियों को नुकसान पहुंचा है। हमले के दौरान ट्रेन में सवार यात्री, महिलाएं और बच्चों में डर दिखा। इस दौरान कुछ यात्रियों ने घटना

का वीडियो बना लिया। वीडियो में यात्री सुरक्षा की गुहार लगाते नजर आ रहे हैं। छतरपुर रेलवे स्टेशन के कर्मचारियों ने बताया कि रात करीब 12ः45 बजे इंदौर से डॉक्टर अंबेडकर नगर से प्रयागराज जाने वाली ट्रेन (14115) स्टेशन पर रुकी, इस दौरान उसमें अंदर बैठे यात्रियों ने भीड़ को देखकर ट्रेन के गेट नहीं खोले। इससे ट्रेन के बाहर खड़े लोग भड़क उठे। वे पत्थर, पानी बोतल फेंकने लगे। लोगों को जो मिल रहा था, वही फेंक रहे थे। आरपीएफ जवान मौके पर थे, लेकिन वह कंट्रोल नहीं कर पाए तो हमने सिविल पुलिस को सूचना दी।

दिल्ली दंगों के आरोपी को चुनाव प्रचार के लिए पैरोल

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने आम आदमी पार्टी के पूर्व पार्षद और दिल्ली दंगों के आरोपी ताहिर हुसैन को मंगलवार को दिल्ली चुनाव प्रचार के लिए 6 दिन की सशर्त कस्टडी पैरोल दी है। ताहिर इस बार असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम से मुस्तफाबाद सीट से कैंडिडेट हैं। ताहिर ने सुप्रीम कोर्ट से कहा, चुनाव में 4 दिन बचे हैं, हमें चुनाव प्रचार के लिए जल्द अंतरिम जमानत दी जाए। ताहिर दिल्ली दंगों के आरोप में 4 साल 9 महीने से जेल में बंद हैं। दिल्ली में विधानसभा चुनाव के लिए 5 फरवरी को वोटिंग है। 8 फरवरी को रिजल्ट आएगा। चुनाव प्रचार 3 फरवरी की शाम को खत्म हो जाएगा। जस्टिस विक्रम नाथ, जस्टिस संजय करोल और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने इस मामले की

सुनवाई की। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा, %हुसैन को 29 जनवरी से 3 फरवरी तक दिन के समय (जेल मैनुअल के अनुसार 12 घंटे के लिए) चुनाव प्रचार के लिए रिहा किया जाएगा। रात में जेल लौटना होगा। कोर्ट ने हुसैन को सुरक्षा खर्च के तौर पर हर दिन 2.47 लाख रुपए देने को कहा। इस तरह उन्हें 6 दिन में 14.82 लाख रुपए देने होंगे।

राम रहीम की सुरक्षा में 200 पुलिसकर्मी तैनात

सिरसा/चंडीगढ़ (एजेंसी)। डेरा सच्चा सौदा का मुखी राम रहीम साढ़े 7 साल बाद सिरसा डेरे में पहुंच गया है। 5 फरवरी को दिल्ली विधानसभा चुनाव की वोटिंग से करीब एक हफ्ते पहले उसे 30 दिन की पैरोल मिली। सजा के बाद वह पहली बार सिरसा डेरा पहुंचा है। रोहतक की सुनारिया जेल से राम रहीम को लेने हनीप्रीत 2 गाड़ियां लेकर आई थी। राम रहीम शाह सतनाम जी धाम के अंदर बने तेरा वास में ठहरा है। इससे पहले हर बार उसे कानून व्यवस्था का हवाला देकर उत्तर प्रदेश के बागपत आश्रम भेजा जाता था। सिरसा पुलिस ने डेरे के सभी गेटों पर 200 पुलिसकर्मी तैनात कर दिए हैं। डेरे को जाते रास्ते पर भी 10 नाके लगाए गए हैं। जिस गेट से राम रहीम की एंट्री हुई, वहां एसएचओ को पुलिस टीम के साथ तैनात किया गया है। इस गेट से किसी को अंदर जाने की परमिशन नहीं है। यहां वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी भी बैन की गई है। डेरा प्रेमियों को भी यहां आने से रोका जा रहा है। रास्ते से ही पुलिस उन्हें वापस लौटा रही है। खुद राम रहीम ने भी सिरसा पहुंचने के बाद वीडियो जारी कर कहा था कि कोई यहां न आए।

राम रहीम पैरोल पर इस बार सिरसा में रहेगा, इस बारे में उसके श्रद्धालुओं को भी जानकारी नहीं थी। सिरसा के ब्लॉक भंगीदास कस्तूर इन्सां ने बताया कि उनके लिए मंगलवार सुबह यह खुशियों वाला सरप्राइज रहा। उनका गुरु साढ़े 7 साल बाद मुख्य डेरे में पहुंचे हैं। सिरसा के संदीप इन्सां और सुरेश मोंगा ने कहा कि सारे श्रद्धालु इससे खुश हैं।

डल्लेवाल बोले- मांगे पूरी होने तक अनशन चलेगा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। फसलों के ब्लॉककी कानूनी गारंटी समेत 13 मांगों को लेकर पंजाब और हरियाणा के खनौरी बॉर्डर पर किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल की भूख हड़ताल आज (मंगलवार) 64वें दिन में प्रवेश कर गई। आज जगजीत सिंह डल्लेवाल ने खनौरी बॉर्डर से जनता को संदेश दिया। उन्होंने लोगों को 12 फरवरी को खनौरी बॉर्डर पर होने वाली महापंचायत में शामिल होने का न्योता दिया। उन्होंने कहा कि आपके आने से उन्हें ऊर्जा मिलती है। डल्लेवाल ने कहा कि देश में यह भावना थी कि देश को एमएसपी गारंटी कानून मिलना चाहिए। जब ??पिछला आंदोलन स्थगित हुआ था, तब दूसरे राज्यों ने शिकायत की थी कि पंजाब के लोग आंदोलन को बीच चौराहे पर छोड़कर जा रहे हैं। हम चाहते थे कि पंजाब पर इस तरह के आरोप न लगाए जाएं। पूरे देश को एमएसपी गारंटी की जरूरत है। पंजाब के पानी को बचाने के लिए पंजाब को भी एमएसपी की जरूरत है। इसके लिए मैं जो कुछ भी कर सकता था, मैंने किया। हालांकि, मैं यह भी कहना चाहता हूं कि मैंने यह खुद नहीं किया, बल्कि भगवान ने हमसे करवाया। जिसने यह किया, वह वाहेगुरु है। मैं इसके लिए पूरे देश का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। 18 तारीख की रात को सरकार ने जो पत्र दिया कि आप के साथ सरकार 14 फरवरी को बैठक करेगी। उस समय

सभी साथियों और दोनों फोरमों ने कहा कि आप मेडिकल एड ले लीजिए। मैंने मेडिकल एड ले ली है। अनशन उसी तरह जारी है। मेरा मन है कि अनशन तक जारी रहेगा, जब जब तक सरकार मांगे पूरी नहीं करती हैं। 14 तारीख को आप सब की भावना है कि हम मीटिंग में जाए। लेकिन तबीयत अनुमति नहीं दे रही है। जाने की शक्ति नहीं है। मैं चाहता हूं कि हमारे आंदोलन को जैसे आज ऊपर वाले की शक्ति मिली है। उसने जिस मेहर की निगाह से इस आंदोलन को कामयाब किया। मैं चाहता था इसके लिए गुरुजी का शुक्राना किया जाए। ऐसे में आज श्री अखंड साहिब के प्रकाश होंगे, 30 तारीख को भोग डाले जाएंगे। उस दिन गुरुजी का शुक्राना करेंगे, जिनकी कृपा से सरकार को सद्बुद्धि आई। वह हमसे बातचीत के लिए तैयार हुई। वहीं, उस दिन अरदास भी करेंगे मोर्चे की जीत हो । किसानों की सारी मांगे पूरी हो जाए।

भारत को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में खेल अहम भूमिका निभा सकते हैं-मांडविया

गांधीनगर (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि भारत को आजादी के शताब्दी वर्ष 2047 तब विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में खेल एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन सकता है। केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री ने कहा कि 2036 में ओलंपिक की मेजबानी करने की भारत की प्रतिबद्धता उसकी बढ़ती शक्ति का प्रतीक है। मांडविया ने राष्ट्रीय रक्षा विश्वविद्यालय में आयोजित प्रथम अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक अनुसंधान सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में कहा,'' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमें 2036 में देश में ओलंपिक का आयोजन करना है। यह भारत की बढ़ती शक्ति का प्रतीक है।'' मंत्री ने कहा कि ऐसे समय में जब भारत 2047 में एक विकसित देश बनने की ओर बढ़ रहा है और आजादी का शताब्दी वर्ष मनायेगा तब खेल इस लक्ष्य को हासिल करने में एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन सकते हैं। मांडविया ने अनुसंधान और नवाचार के महत्व पर जोर देते हुए कहा, '' हम अगर अनुसंधान और नए विचारों को लागू करने में विफल रहे तो लगातार प्रगति करने वाली दुनिया में पीछे रह जायेंगे।''

उन्होंने कहा,'' जब हम खेलों को बढ़ावा देते हैं तो हमें कई मुद्दों का समाधान मिल जाता है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री मोदी ने 'खेलो इंडिया' का नारा दिया और नागरिकों को फिट रखने के लिए 'फिट इंडिया' अभियान शुरू किया।'

ग्रैंडमास्टर याकुबोएव को वैशाली से हाथ नहीं मिलाना पड़ा महंगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। उज्बेकिस्तान के ग्रैंडमास्टर याकुबोएव मौजूदा समय में काफी विवादों में है। दरअसल, ग्रैंडमास्टर याकुबोएव ने टाटा स्टील शतरंज टूर्नामेंट के बाद भारत की आर वैशाली से हाथ नहीं मिलाया। जिसके बाद इस मामले पर विवाद खड़ा हो गया है।

वहीं,बता दें कि, याकुबोएव ने धार्मिक कारणों का हवाला देते हुए भारतीय महिला ग्रैंडमास्टर वैशाली से हाथ मिलाने से इनकार कर दिया। इसका वीडियो वायरल होने पर विवाद हो गया और बाद में उन्होंने माफी मांगी और कहा कि उनका इरादा वैशाली का अपमान करना नहीं था बल्कि धार्मिक कारणों के चलते उन्होंने ऐसा किया। चेसबेस इंडिया द्वारा सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर किया गया जिसमें वैशाली को याकुबोएव के खिलाफ चौथे दौर की बाजी की शुरुआत से पहले अपना हाथ बढ़ाते हुए देखा जा सकता है। लेकिन उज्बेकिस्तान का खिलाड़ी बिना हाथ मिलाए बैठ गया जिससे भारतीय खिलाड़ी असहज नजर आई। हालांकि, वैशाली ने 2019 में ग्रैंडमास्टर बने याकुबोएव को हराया और चैलेंजर वर्ग में आठवें दौर के बाद फिलहाल याकुबोएव के तीन अंक हैं।

जिसके बाद सोशल मीडिया पर ये वीडियो काफी वायरल होने के बाद याकुबोएव ने एक्स पर पोस्ट कर माफी मांगी।

गुकेश ने अब्दुसात्तोरोव को बराबरी पर रोका, प्रज्ञानानंदा संयुक्त रूप से शीर्ष पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। विज्क आन जी (नीदरलैंड)। विश्व चैंपियन डी गुकेश ने यहां टाटा स्टील शतरंज टूर्नामेंट के छठी बाजी में संयुक्त रूप से शीर्ष पर काबिज उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसात्तोरोव के साथ ड्रॉ खेला, जबकि आर प्रज्ञानानंदा ने गत चैंपियन चीन के वेई यी के साथ अंक साझा किये। अब्दुसात्तोरोव और प्रज्ञानानंदा संभावित छह में से 4.5 अंकों के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष पर काबिज है जबकि गुकेश चार अंकों के साथ उनके बाद है। साल के पहले बड़े टूर्नामेंट में अभी सात बाजियों के मुकाबले बाकी हैं। पी हरिकृष्णा, सर्बिया के एलेक्सी सरना और स्लोवेनिया के व्लादिमीर फेडोसीव साढे तीन अंकों के साथ संयुक्त रूप से चौथे स्थान पर हैं। गुकेश ने अब्दुसात्तोरोव के खिलाफ चुनौतीपूर्ण मुकाबले में पकड़ ढीली पड़ने के बाद अच्छी वापसी की और 64 चालों के बाद इसे ड्रॉ करने पर सहमत हो गये। इस मुकाबले की शुरुआत इटालियन ओपनिंग (सफेद मोहरों से प्यादा और वजीर के चाल के जवाब में काले मोहरों से प्यादा और घोड़े (नाइट) की चाल) से हुई। शुरुआती चालों के बाद अब्दुसत्तोरोव ने मैच पर अपनी पकड़ मजबूत करनी शुरू की। आखिरी कुछ चालों गुकेश को अपना एक मोहरा गंवाने के लिए मजबूर होना पड़ा। उनके लिए स्थिति तब और जटिल हो गयी जब अब्दुसत्तोरोव ने तीन प्यादों के लिए अपने घोड़े की बलि दे दी।

नागल शीर्ष 100 से बाहर, बोपन्ना को अक्टूबर 2022 के बाद पहली बार शीर्ष 20 में जगह नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के सुमित नागल एटीपी टेनिस एकल रैंकिंग में लगातार 10 महीने शीर्ष 100 में रहने के बाद लचर प्रदर्शन के कारण जारी नवीनतम रैंकिंग में इससे बाहर हो गए जबकि ऑस्ट्रेलियाई ओपन में जल्दी हारने के कारण अनुभवी रोहन बोपन्ना भी अब युगल रैंकिंग में शीर्ष 20 खिलाड़ियों का हिस्सा नहीं हैं। नागल मार्च 2024 से शीर्ष 100 खिलाड़ियों में शामिल थे। उन्होंने पिछले साल ऑस्ट्रेलिया ओपन में अच्छे प्रदर्शन की बदौलत फरवरी 2024 में पहली बार शीर्ष 100 एकल खिलाड़ियों की सूची में जगह बनाई थी।

नवीनतम रैंकिंग में वह हालांकि 16 स्थान के नुकसान से 106वें नंबर पर खिसक गए हैं। उनके 565 अंक हैं। नागल पिछले कुछ समय से खराब फॉर्म से जूझ रहे हैं। उन्होंने जुलाई में विंबलडन 2024 के बाद से 18 टूर्नामेंट में हिस्सा लिया और इस दौरान एटीपी टूर और चैलेंजर सर्किट पर मुख्य ड्रॉ के केवल तीन मैच जीत पाए। शीर्ष 100 में शामिल खिलाड़ियों को ग्रैंडस्लैम सहित बड़ी प्रतियोगिताओं में सीधे प्रवेश मिलता है जहां पहले दौर में हार के बावजूद खिलाड़ियों ठीक-ठाक इनामी राशि मिल जाती है। नागल के बाद शशिकुमार मुकुंद 365वें स्थान पर हैं। उन्हें दो स्थान का फायदा हुआ है।

रामकुमार रामनाथन एक स्थान के नुकसान से 406वें जबकि उनके बाद करण सिंह (20 स्थान के नुकसान से 496वें स्थान पर) और आर्यन शाह (नौ स्थान के नुकसान से 593वें स्थान पर) का नंबर आता है। बोपन्ना युगल रैंकिंग में पांच स्थान के नुकसान से21वें स्थान पर खिसक गए हैं। यह 44 वर्षीय खिलाड़ी मेलबर्न में ऑस्ट्रेलियाई ओपन के पहले दौर में अपने नए जोड़ीदार निकोलस बेरिनटोस के साथ हार गया। यह भारतीय ऑस्ट्रेलियाई ओपन में गत चैंपियन है। बोपन्ना तीन अक्टूबर 2022 से नियमित तौर पर शीर्ष 20 में शामिल हैं। युकी भांबरी 47वें स्थान पर बने हुए हैं जबकि उनके बाद एन श्रीराम बालाजी (एक स्थान के फायदे से 64वें स्थान पर), रित्विक चौधरी बोल्लीपल्ली (सात स्थान के नुकसान से 79वें स्थान पर) और अर्जुन काधे (एक स्थान के फायदे से 83वें स्थान पर) का नंबर आता है। मुकुंद, रामकुमार, बालाजी, करण सिंह और बोल्लीपल्ली भारतीय डेविस कप टीम का हिस्सा हैं जो एक और दो फरवरी को विश्व ग्रुप एक प्ले ऑफ मुकाबले में टोगो से भिड़ेगी। नागल और युकी ने स्वयं को डेविस कप मुकाबले के लिए उपलब्ध नहीं रखा है।

इस दिल्ली टीम के साथ प्रैक्टिस करेंगे विराट कोहली

नई दिल्ली (एजेंसी)। विराट कोहली 13 साल के लंबे इतंजार के बाद 30 जनवरी को घरेलू क्रिकेट खेलते हुए दिखेंगे। कोहली रेलवे के खिलाफ मैदान पर उतरेंगे। दिल्ली में होने वाले इस मुकाबले के लिए कोहली मंगलवार, 28 जनवरी से अभ्यास करेंगे। दिल्ली के कोच सरनदीप सिंह ने ये भी जानकारी दी है। वहीं केएल राहुल का नाम भी कर्नाटक की रणजी टीम में शामिल किया गया है। हालांकि, उनके खेलने या ना खेलने के बारे में अभी स्थिति साफ नहीं है। बीसीसीआई ने ऑस्ट्रेलिया में टीम इंडिया की करारी शिकस्त के बाद

सभी खिलाड़ियों के लिए घरेलू क्रिकेट खेलना अनिवार्य कर दिया गया है। बीसीसीआई की नई गाइडलाइंस के चलते ही रोहित शर्मा, ऋषभ पंत, शुभमन गिल, रविंद्र जडेजा, यशस्वी जायसवाल 23 जनवरी से खेले गए रणजी मुकाबलों में नजर आए थे। विराट कोहली तब गर्दन की चोट के कारण नहीं खेले थे। उन्होंने बीसीसीआई से मोहलत मांग ली थी। अब वे 30 जनवरी से होने वाले दिल्ली-रेलवे मैच में खेलेंगे। ये विराट कोहली का 2012 के बाद पहला रणजी मैच होगा। क्रिकइंफो के मुताबिक दिल्ली के कोच सरनदीप सिंह ने बताया कि कोहली मंगलवार से टीम के साथ अभ्यास शुरू कर देंगे।

कोहली के प्रैक्टिस के फोटो पिछले कुछ दिनों से सोशल मीडिया पर देखे गए हैं। कोहली इन तस्वीरों में पूर्व बल्लेबाजी कोच संजय बांगड़ के साथ दिख रहे हैं। 30 जनवरी से रणजी ट्रॉफी के मौजूदा सीजन के आखिरी ग्रुप मैच खेले जाने हैं। इन मैचों के बाद विराट कोहली भारतीय टीम के साथ नजर आएंगे। फिलहाल, भारत और इंग्लैंड के बीच पहला वनडे मैच 6 फरवरी को खेला जाएगा।

राहुल हरियाणा के खिलाफ रणजी ट्रॉफी मैच के लिए कर्नाटक की टीम में

बेंगलुरू (एजेंसी)। अनुभवी भारतीय बल्लेबाज लोकेश राहुल को कर्नाटक की टीम में शामिल किया गया जो 30 जनवरी से यहां शुरू होने वाले रणजी ट्रॉफी एलीट ग्रुप सी के अपने अंतिम लीग मैच में तालिका में शीर्ष पर काबिज हरियाणा का सामना करेगी। राहुल को भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) की मेडिकल टीम ने खेलने के लिए हरी झंडी दे दी है। यह विकेटकीपर बल्लेबाज ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद कोहनी की चोट से उबर रहा था। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर वह सभी पांच टेस्ट खेले थे।

पीटीआई ने 21 जनवरी को बताया था कि राहुल रणजी ट्रॉफी के अंतिम लीग मैच में कर्नाटक के लिए खेलेंगे जो 2020 में कोलकाता में बंगाल के खिलाफ खेलने के बाद उनका पहला रणजी ट्रॉफी मैच होगा। ऋषभ पंत, रोहित शर्मा, यशस्वी जायसवाल और रविंद्र जडेजा जैसे भारत के अधिकांश सीनियर खिलाड़ी पिछले दौर में अपनी-अपनी घरेलू टीम के लिए खेले थे लेकिन राहुल पंजाब के खिलाफ मैच में बाहर रहे जिसे कर्नाटक ने एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में पारी और 207 रन से जीता था।

राहुल के मंगलवार से कर्नाटक की टीम के साथ ट्रेनिंग करने की उम्मीद है। टीम का नेतृत्व सलामी बल्लेबाज मयंक अग्रवाल कर रहे हैं। कर्नाटक के तेज गेंदबाजी आक्रमण को भी मजबूत मिली है क्योंकि विद्वथ कावेरप्पा की टीम में वापसी हुई है। कावेरप्पा चोट के कारण मौजूदा घरेलू सत्र के बड़े हिस्से से बाहर रह चुके हैं।

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए टिकटों की बिक्री का ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। अगले महीने 19 फरवरी से आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 का आगाज होने जा रहा है। इसके लिए आईसीसी ने इस टूर्नामेंट के लिए टिकटों की जानकारी सार्वजनिक कर दी है। आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के मुकाबले 19 फरवरी से 9 मार्च तक पाकिस्तान और सयुंकत अरब अमीरात में आयोजित किए जाएंगे।

ग्रुप-स्टेज मुकाबलों और पाकिस्तान में दूसरे सेमीफाइनल के लिए टिकट मंगलवार 28 जनवरी की दोपहर 1.30 बजे भारतीय समयानुसार से सामान्य बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे। फैंस आधिकारिक प्लेटफॉर्म के जरिए टिकट खरीद सकते हैं। जबकि फिजिकल टिकट 3 फरवरी से पाकिस्तान भर से टीसीएस एक्सप्रेस केंद्रों पर उपलब्ध होंगे।

पाकिस्तान में सामान्य स्टैंड के लिए टिकट की कीमत 1 हजार पाकिस्तानी रुपये यानी करीब 310 भारतीय रुपये से शुरु है। इसमें प्रीमियम सीटिंग विकल्प 1,500 पाकिस्तान रुपये यानी करीब 464 भारतीय रुपये से उपलब्ध हैं। मैच कराची, लाहौर और रावलपिंडी में आयोजित किए जाएंगे।

आगामी 20 और 23 फरवरी और 2 मार्च को दुबई में होने वाले भारत के ग्रुप-स्टेज मुकाबलों के विवरण की घोषणा जल्द की जाएगी। वहीं 9 मार्च को होने वाले फाइनल के लिए टिकट पहले सेमीफाइनल के बाद उपलब्ध होंगे। बता दें कि 15 मैच के इ टूर्नामेंट में टॉप 8 क्रिकेट देश 19 दिनों तक प्रतिस्पर्धा करेंगे।

तीसरे टी20 मुकाबले में भी शमी को नहीं मिलेगी जगह?

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और इंग्लैंड के बीच 5 मैचों की टी20 सीरीज का तीसरा मुकाबला राजकोट में खेला जाएगा। इस मैच में शमी खेलेंगे या नहीं ये सवाल हर क्रिकेट फैंस के मन में चल रहा है क्योंकि सभी अपने इस स्टार तेज गेंदबाज को खेलते हुए देखना चाहते हैं।

भारत और इंग्लैंड के बीच पहले टी20 मैच से ठीक पहले तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को वॉर्म-अप करते हुए देखा गया था जिससे फैंस को उम्मीद जगी की वह आखिरकार नेशनल टीम में वापसी करेंगे। लेकिन फिर ऐसा नहीं हुआ। दूसरे टी20 मैच से पहले येही स्थिति थी जहां लोगों को उम्मीद थी कि शमी खेलेंगे, लेकिन एक बार फिर उन्हें मौका नहीं मिला। जिससे ये अटकलें तेज हो गई हैं कि ये तेज गेंदबाज पूरी तरह से फिट नहीं है। हालांकि, इसके बाद बीसीसीआई ने टीम में दो अनफिट खिलाड़ियों नितीश रेड्डी और रिंकू सिंह को टीम से बाहर कर दिया लेकिन शमी

अभी भी टीम के साथ बने हुए हैं। शमी पूरी तरह से फिट हैं यान हीं इसे लेकर अभी कोई आधिकारिक जानकारी नहीं है और असमंजस की स्थिति बनी हुई है। वहीं कुछ दिन पहले प्री-मैच विजुअल्स को देखने के बाद पीयूष चावला ने कहा कि शमी पूरी तरह से फिट नहीं हैं, क्योंकि वह लंगड़ा रहे थे।

अगर आप उनके रन-अप देखें तो वह अभी भी थोड़ा लंगड़ा रहे हैं। पीयूष ने आगे कहा था कि अभी मुक्य लक्ष्य चैंपियंस ट्रॉफी है उसके लिए शमी का फिट होना जरूरी है। इस टी20 सीरीज में बहुत सारे मैच हैं और भले ही वह कुछ मैच मिस कर दें तो ये अभी फैसला है।

हालांकि, शमी तीसरा मैच खेलेंगे या नहीं इसके बारे में उनके बचपन के कोच बदरुद्दीन ने रेवस्पोर्ट्ज को बताया कि, शमी पूरी तरह से फिट हैं और उन्होंने मुझे पहले टी20 मैच के लिए कोलकाता जाने से पहले बताया था कि सब कुछ ठीक है।

उनकी फिटनेस बिल्कुल ठीक है। मुझे लगता है कि वो इस समय उन पर भार डाल रहे हैं क्योंकि वो एक साल से भी ज्यादा समय से इंटरनेशनल सेट-अप से बाहर थे।

मुझे यही लगता है कि शमी को आखिरी दो टी20 मैचों में वनडे सीरीज से ठीक पहले मौका मिलेगा। वैसे टीम प्रबंधन इस बारे में बेस्ट जज हैं और मुझे उम्मीद है कि इस संबंध में कोच गौतम गंभीर और शमी के बीच साफ बातचीत हुई होगी।

जसप्रीत बुमराह को मिला आईसीसी मेन्स टेस्ट क्रिकेटर ऑफ द ईयर का खिताब

नई दिल्ली (एजेंसी)। जसप्रीत बुमराह ने साल 2024 में बेहतरीन गेंदबाज की और घरेलू मैदान सहित विदेशी धरती पर भी अपना डंका बजाया। बुमराह को उनके बेहतरीन प्रदर्शन का इनाम मिला और आईसीसी ने उन्हें टेस्ट क्रिकेटर ऑफ द ईयर 2024 चुना। आईसीसी ने टेस्ट क्रिकेटर ऑफ द ईयर 2024 के लिए चार खिलाड़ियों को नॉमिनेट किया था जिसमें से बुमराह के साथ जो रूट, हैरी ब्रूक और श्रीलंका के कामिंदु मेंडिस थे, लेकिन बुमराह ने इन सभी खिलाड़ियों को पछाड़ दिया। जसप्रीत बुमराह लंबे समय से पीठ की चोट के कारण क्रिकेट से दूर थे और फिर उन्होंने साल 2023 में मैदान पर क्रिकेट के सबसे लंबे प्रारूप में वापसी की। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा और जमकर विकेट अपने नाम करते हुए कई रिकॉर्ड्स भी बनाए। साल 2024 में बुमराह ने इंग्लैंड और बांग्लादेश के खिलाफ शानदार गेंदबाजी अपनी धरती पर की तो वहीं इस साल उन्होंने साउथ अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया में भी बेहतरीन गेंदबाजी की। बुमराह साल 2024 में टेस्ट क्रिकेट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज थे और उन्होंने कुल 71 बल्लेबाजों को आउट करने में सफलता हासिल की। वही इस लिस्ट में दूसरे स्थान पर मौजूद

इंग्लैंड के गस एटकिंसन से वो काफी आगे थे। साल 2024 में उन्होंने 357 ओवर फेंक और उनका इकानॉमी रेट सिर्फ 2.96 का रहा जो काफी शानदार था। वहीं उनका औसत टेस्ट में 14.92 का रहा साथ ही स्ट्राइक रेट सिर्फ 30.1 का रहा। बुमराह ने साल 2024 में 4 बार फोर विकेट हॉल जबकि 5 बार फाइव विकेट हॉल लेने का कमाल किया और उनकी बेस्ट गेंदबाजी 45 रन देकर 6 विकेट रहा।

बुमराह को इस साल आईसीसी मेन्स टेस्ट क्रिकेट टीम 2024 में भी शामिल किया गया था जिसके कप्तान पैट कमिंस थे। इस टेस्ट टीम में बुमराह के अलावा रविंद्र जडेजा और यशस्वी जायसवाल को भी शामिल किया गया था।

कमिश्नर और प्रभारी आईजी ने चाकघाट में तीर्थयात्रियों की सुविधाओं का लिया जायजा

चाकघाट बार्डर में महाकुंभ यात्रियों का उमड़ा सैलाब

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। प्रयागराज महाकुंभ का मुख्य स्नान मौनी अमावस्या 29 जनवरी को है। इसके बाद एक अन्य मुख्य स्नान 3 फरवरी को बसंत पंचमी पर होगा। इसके कारण रीवा से प्रयागराज मार्ग पर वाहनों की कतार लगी हुई है। प्रयागराज मार्ग पर सोहागी से चाकघाट बार्डर तक यात्रियों का सैलाब है। कमिश्नर बीएस जामोद तथा प्रभारी आईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय ने अधिकारियों के साथ क्षेत्र का भ्रमण करके तीर्थयात्रियों को दी जा रही सुविधाओं का जायजा लिया। यातायात व्यवस्था बहाल रखने तथा यात्रियों के ठहरने की समुचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गईं।

कमिश्नर ने रैनबसेरे का निरीक्षण करते हुए यात्रियों से सुविधाओं की जानकारी ली। यात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए कमिश्नर ने एसडीएम त्योंथर तथा सीएमओ को मण्डी प्रांगण में तत्काल यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था करने एवं दो बारात घरों में अतिरिक्त व्यवस्था करने के निर्देश दिए। कमिश्नर ने कहा कि दूर-दूर से आए यात्री प्रयागराज में पुण्य स्नान का लाभ ले सकें तथा किसी भी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े ऐसी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें। वाहनों की अधिक संख्या होने पर बीच-बीच में 30-40 मिनट के लिए सीमा बंद की जा रही है। उत्तर प्रदेश पुलिस के अधिकारियों से सतत सम्पर्क में रहकर वाहनों की आवाजाही सुनिश्चित करें। लाउड स्पीकर के माध्यम से मेला क्षेत्र में भीड़ की स्थिति तथा जाम के कारण वाहनों को रोकने के संबंध में लगातार सूचनाएं प्रसारित करें। जिससे यात्री परेशान न हों। कमिश्नर ने रैन बसेरे में बनाये गये मेडिकल कक्ष का निरीक्षण किया। उन्होंने बीएमओ तथा चिकित्सा कर्मियों से उपचार सुविधाओं की जानकारी ली। मौके पर उपस्थित मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव शुक्ला ने उपचार सुविधाओं की जानकारी दी।

कमिश्नर ने कहा कि सभी रैन बसेरों में पर्याप्त गद्दे, रजाई तथा अलाव की व्यवस्था करें। मेडिकल टीम 24 घंटे तैनात रहे। नगर पंचायत यात्रियों के लिए निःशुल्क भोजन की भी व्यवस्था करे। पेयजल की आपूर्ति, साफ-सफाई तथा सुरक्षा के लिए आवश्यक कर्मचारी तत्काल तैनात करें। प्रभारी आईजी ने पुलिस अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि सड़क पर वाहनों की बहुत बड़ी संख्या है। उत्तरप्रदेश पुलिस से सतत संपर्क रखकर यातायात को यथासंभव सुगम बनाएं। आवश्यक होने पर चाकघाट, सोहागी, गढ़, गंगेव और मनगवां में भी वाहनों को रोंके। रात में भी रैन बसेरों में पर्याप्त सुरक्षा बल तैनात रहे। असामाजिक तत्वों पर कड़ी निगरानी रखें। यात्रियों को समय-समय पर मेला क्षेत्र के संबंध में आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध कराएं। कमिश्नर ने रैनबसेरे में तीर्थयात्रियों के साथ गाया भजन - कमिश्नर ने रैन बसेरा में ठहरे यात्रियों से संवाद किया। महाराष्ट्र से 55 यात्रियों का समूह गंगा स्नान के लिए जाते हुए रैन बसेरे में ठहरा हुआ है। यात्रियों का दल भजन गाकर यात्रा की थकान दूर कर रहे थे। कमिश्नर जामोद ने भी यात्रियों के साथ मिलकर आत्मीयता के साथ झांझ बजाकर तीथयात्रियों के भजन के आनंद को दुगुना किया।

कमिश्नर तथा प्रभारी आईजी ने पुलिस चेक पोस्ट तथा टोल प्लाजा का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने सोहागी घाट में किए जा रहे सड़क सुधार के कार्य का अवलोकन किया। टोल प्लाजा में तैनात एंबुलेंस और क्रेन व्यवस्थित पाई गईं। एंबुलेंस में ऑक्सीजन सिलेण्डर, उपचारकर्मी तथा पर्याप्त दवाएं उपलब्ध पाई गईं। कमिश्नर तथा प्रभारी आईजी ने हनुमना बार्डर का भी भ्रमण करके व्यवस्थाओं का जायजा लिया। भ्रमण के समय एसडीएम त्योंथर संजय जैन, नगर परिषद अध्यक्ष विभव कुमार जायसवाल, संभागीय प्रबंधक एमपीआरडीसी उमेश सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक कुमार लाल, एसडीओपी त्योंथर उदित मिश्रा, सीएमओ चाकघाट संजय सिंह, सीईओ त्योंथर राहुल पाण्डेय तथा अन्य अधिकारी उनके साथ रहे।

विकास के साथ ही शांति व सौहार्द का वातावरण निर्मित हुआ

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि रीवा में विकास के साथ ही शांति व सौहार्द का वातावरण निर्मित हुआ है। लोग अब विकास की बातें करते हैं तथा अपने जनप्रतिनिधियों से निःसंकोच विकास कार्यों की मांग करते है जो यह दर्शाता है कि लोकतंत्र अब परिपक्व हो रहा है। शुक्ल शहीद रामानंद सिंह की पुण्य तिथि पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने कहा कि नामानंद सिंह जी शोषण व अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाते थे तथा लोगों की मदद के लिये हमेशा आगे आ जाते थे। वह अपनी सहजता व सौम्यता के लिये भी जाने जाते थे। शुक्ल ने कहा कि वर्षों पूर्व रीवा में अराजकता का वातावरण था। लोग सुरक्षित नहीं थे। मगर हमारी सरकार के आने के बाद रीवा व मध्यप्रदेश शांति का टापू बन गया है। लोग विकास की चर्चा करते हैं तथा अपने गली, मोहल्ले, कालोनी व शहर में विकास कार्यों के लिये जनप्रतिनिधियों से निःसंकोच अपनी मांगे रखते हैं। क्योकि जनता से चुने हुए व्यक्ति जनता के लिये ही कार्य कर रहे हैं। उप मुख्यमंत्री ने शहीद रामानंद सिंह एवं स्व. शिवेन्द्र सिंह जी को श्रृद्धांजलि अर्पित करते हुए आश्वस्त किया कि बरा मोहल्ले का नाम शहीद रामानंद सिंह के नाम पर तथा रिलायंस पेट्रोल पंप के बगल के मार्ग का नाम स्व. शिवेन्द्र सिंह जी के नाम पर कराये जाने का कार्य किया जायेगा। कार्यक्रम में सांसद सतना गणेश सिंह, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं विधायक देवतालाब गिरीश गौतम, अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय, पूर्व सांसद देवराज सिंह एवं बुद्धसेन पटेल, पूर्व विधायक रामलखन पटेल, माया सिंह, डॉ. अजय सिंह, राम सिंह, रश्मि सिंह, पुष्पेन्द्र सिंह सहित बड़ी संख्या में क्रांतिकारी मोर्चा से जुड़े व्यक्ति तथा स्थानीय जन उपस्थित रहे।

पुलिस ने लौटाए खोए हुए 115 मोबाइल, जिले भर से लोग पहुंचे कंट्रोल रूम

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जनवरी खत्म होते-होते लोगों के चेहरे पर खुशी आ गई, जिनके मोबाइल खो गए थे या चोरी हो गए थे। दरअसल, रीवा के पुलिस कंट्रोल रूम में जिले के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में खोए 115 मोबाइल मंगलवार को मालिकों को लौटा दिए गए। बताया गया कि मोबाइल गुमने सहित साइबर अपराधों में लगातार हो रही बढ़ोतरी के बाद संभागीय साइबर सेल ने हर थाने को एक्सेस दे दिया है। इसके बाद से लगातार साइबर अपराधों में प्रयोग आने वाले मोबाइल और गुमने वाले मोबाइल फोन को थाने में मौजूद साइबर एक्सपर्ट द्वारा ट्रेस किया जाने लगा।

इसके चलते शहर के विश्वविद्यालय, बिछिया अमहिया कोतवाली समान चोरहटा थाना सहित ग्रामीण क्षेत्र के थाने में मौजूद साइबर एक्सपर्ट गुमे हुए मोबाइल को ट्रेस करने लगे। इसके बाद विभिन्न स्थानों के साइबर एक्सपर्ट ने 115 मोबाइल को ट्रेस करते हुए न सिर्फ उन्हें बरामद किया बल्कि उनके मालिकों को वापस लौटा दिया। पुलिस कंट्रोल रूम में आयोजित किए गए कार्यक्रम के दौरान पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह ने खोए मोबाइल मालिकों को लौटाए।

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे का जलाया पुतला, महाकुंभ स्नान पर टिप्पणी का विरोध किया

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मल्लिकार्जुन खड़गे पर सनातन विरोधी होने का आरोप लगाते हुए भाजपा युवा मोर्चा ने जय स्तंभ चौक पर पुतला फूंका। इस दौरान युवा मोर्चा के सदस्यों ने कांग्रेस अध्यक्ष के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

भाजपा युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष शिवेंद्र उपाध्याय ने कहा कि सार्वजनिक मंच पर मल्लिकार्जुन खड़गे ने हमारी आस्था का प्रतीक मां गंगा और उसमें डुबकी लगाने से मिलने वाले पुण्य फल को लेकर आपत्तिजनक टिप्पणी की गई है। देश का सनातनी और भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता उन्हें कभी माफ नहीं करेगा। प्रयागराज में चल रहे महाकुंभ में समूचे देश सहित विदेश के लोग भी गंगा स्नान करने आ रहे हैं। जिसे विज्ञान सहित शास्त्रों ने भी प्रमाणित किया है।

उन्होंने कहा कि ऐसे में कांग्रेस अध्यक्ष का बयान कांग्रेस की सनातन विरोधी होने का पुख्ता प्रमाण है। जिसे भारतीय जनता पार्टी कदापि स्वीकार नहीं करेगी। देश भर में भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा द्वारा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पुतला फूंकने सहित विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है। आगे भी हम मां गंगा के इस अपमान पर चुप नहीं रहेंगे। इस लड़ाई को संसद से सड़क तक लड़ने का काम करेंगे।

कैंसर जागरूकता के लिये वॉकथॉन रैली 2 फरवरी को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कैंसर रोग के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से वॉकथॉन रैली 2 फरवरी को आयोजित की गई है। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करेंगे। नेशनल हास्पिटल के संयोजकत्व में आयोजित रैली कलेक्ट्रेट रीवा परिसर से प्राप्तः 8 बजे आरंभ होकर अटल पार्क में समाप्त होगी। कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के प्रति जनमानस को जागरूक करने तथा इसकी प्रारंभिक पहचान को बढ़ावा देने व रोकथाम के उपायों की जानकारी देने के लिये रैली में जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी स्थानीयजन तथा विद्यार्थी अपनी सहभागिता निभायेंगे।

सुविधायें दुरूस्त रखने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जनजातीय कार्य विभाग द्वारा जिले में संचालित छात्रावासों में शासन द्वारा प्रदत्त सुविधाओं की सुनिश्चितता के साथ ही व्यवस्थायें दुरूस्त रखने के निर्देश दिये गये हैं। जिला संयोजक के समस्त अनुसूचित जाति/जनजातीय बालक, बालिका, आश्रम व छात्रावासों के अधीक्षकों को निर्देशित किया है कि छात्रावास एवं परिसर की नियमित साफ-सफाई रखी जाये, भोजन की गुणवत्ता का ध्यान दिया जाये तथा दोनों टाइम नाश्ता एवं सब्जी बदल कर दी जाये। सप्ताह में एक दिन अनिवार्य रूप से विशेष भोजन दिया जाने, रसोई कक्ष में कुकर की रबर एवं सीटी, गैस सिलेण्डर के पाइप एवं रेगुलेटर का परीक्षण करने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि प्रत्येक छात्रावास में अधीक्षक अनिवार्य रूप से निवास करें। कन्या छात्रावासों में कोई भी पुरूष कर्मचारी छात्रावास परिसर में निवास न करे ।

आर्थिक सहायता राशि स्वीकृत

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। आकस्मिकता योजनान्तर्गत अत्याचार से पीड़ित 80 व्यक्तियों को 64 लाख 50 हजार रूपये की सहायता राशि स्वीकृत की गई है। जानकारी के अनुसार अनुसूचित जाति वर्ग के 53 पीड़ित हितग्राहियों को 39 लाख 75 हजार रूपये तथा अनुसूचित जनजाति वर्ग के पीड़ित 27 हितग्राहियों को 24 लाख 75 हजार रूपये की सहायता राशि आकस्मिकता योजना के तहत स्वीकृत की गई है।

जनसुनवाई में आये 87 आवेदन, संबंधित अधिकारियों को कार्यवाही के दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में संयुक्त कलेक्टर पी.के. पाण्डेय एवं श्रेयस गोखले ने लोगों की समस्यायें सुनीं। कलेक्ट्रेट के मोहन सभागार में आयोजित जनसुनवाई में प्राप्त 87 आवेदनों को संबंधित विभागीय अधिकारियों को प्रेषित कर समाधानकारक कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया।

जनसुनवाई में पड़रा रीवा वार्ड क्रमांक 4 निवासी राधा साकेत के राशन कार्ड के डाटा सुधार करने तथा संसारपुर निवासी शिवशंकर सोनी के भूमि विवाद का निपटारा तथा करने पटपहरा निवासी मनीष मिश्रा के बीपीएल कार्ड बनाने के आवेदनों को संबंधित तहसीलदारों को कार्यवाही के लिये प्रेषित किया गया। इसी प्रकार रजा मोहम्मद पडुआ के खसरा सुधार, सोहागी के बुद्धसेन मिश्रा के अवैध अतिक्रमण हटाने के आवेदन पर संबंधित एसडीएम को कार्यवाही किये जाने हेतु निर्देशित किया गया। रमाकांत पटेल के अनुकंपा नियुक्ति तथा तरूणेन्द्र सिंह बघेल हिनौती के आवासीय प्लाट के ऊपर से 33 हजार वोल्ट की विद्युत लाइन हटाने के आवेदनों को विद्युत विभाग को कार्यवाही के लिये तथा रौसर निवासी राजेश्वर प्रसाद मिश्रा के फर्जी ऋण की जांच कराने के आवेदन को जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक के महाप्रबंधक को कार्यवाही करने हेतु प्रेषित किया गया।

कुंआ चचाई निवासी राजभजन सिंह लोधी के खाद्यान्न पर्ची में नाम जोड़ने के आवेदन एवं लूक निवासी रामनरेश द्विवेदी के प्रधानमंत्री आवास का लाभ दिलाने के आवेदन के संबंधित जनपद के सीईओ को तथा विट्टन सिंह खरहटी के लाड़ली लक्ष्मी योजना की किश्त प्रदान करने के आवेदन पर जिला महिला लाल विकास अधिकारी को कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये गये। उपरहटी निवासी राजीव कुमार शुक्ला ने कैंसर के इलाज का आवेदन दिया जिसे मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को कार्यवाही करने के लिये निर्देशित किया गया। विमला मिश्रा धौरहरा के भू अर्जन राशि दिलाने के आवेदन पर भू अर्जन अधिकारी को तथा शा. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तिघरा के छात्र प्रांसू बुनकर के छात्रवृत्ति प्रदान करने के आवेदन पर जिला शिक्षा अधिकारी को कार्यवाही करने के निर्देश दिये गये। जनसुनवाई में विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

देखने सीखने और मनन करने का अवसर देती है प्रदर्शनी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मार्तंड स्कूल प्रांगण में तीन दिवसीय मेगा यशस्वी भारत प्रदर्शनी का सांसद सहित विधायक ने शुभारंभ किया। रीवा नगर के मार्तंड स्कूल प्रांगण में तीन दिवसीय मेगा प्रदर्शनी का शुभारंभ सांसद जनार्दन मिश्रा, विधायक इं. नरेंद्र प्रजापति, पूर्व विधायक श्यामलाल द्विवेदी, पंचू लाल प्रजापति, भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र गुप्ता द्वारा किया गया। अतिथियों द्वारा सभी स्टाल का निरीक्षण कर विभिन्न संगठनों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकनकर सृजनात्मक कार्यों की प्रशंसा की गई। प्रदर्शनी का शुभारंभ करते हुए सांसद जनार्दन मिश्रा ने कहा कि ज्ञान विज्ञान के माध्यम से यशस्वी भारत की कल्पना को पूरा करने का काम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुवाई में हो रहा है। प्रदर्शनी के माध्यम से प्राचीनता और आधुनिकता के ज्ञान विज्ञान का संगम हो रहा है। रीवा संसदीय क्षेत्र के युवा, किसान, बुद्धिजीवी, व्यापारी प्रदर्शनी में पहुंचकर नवाचार को देखकर अपने लिए उपयोगी संसाधनों का उपयोग कर आधुनिकता के साथ अपने कार्य क्षेत्र की गति बढ़ाने में लाभ उठाएं। यह प्रदर्शनी, देखने, सीखने और मनन करने का उचित माध्यम बन चुकी है। जिला अध्यक्ष वीरेंद्र गुप्ता ने अपने विचार रखते हुए कहा कि इस तरह की प्रदर्शनियों के माध्यम से हमारे विंध्य क्षेत्र के लोग अपनी कार्य कुशलता को बढ़कर अपनी क्षमताओं में बेतहाशा वृद्धि कर सकते हैं। प्रदर्शनी में इंजीनियरिंग कॉलेज रीवा के युवाओं का नवाचार अत्यंत ही सराहनीय है। इंजी. नरेंद्र प्रजापति ने मेघा प्रदर्शनी की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन प्रदर्शनियों के माध्यम से हमारे विद्यार्थियों को एक नया वातावरणऔर सृजनात्मक गुणात्मक ज्ञान की वृद्धि करने का अवसर मिलता है। पूर्व विधायक श्यामलाल द्विवेदी ने प्रदर्शनी आयोजन का आभारव्यक्त करते हुए कहा कि हमारे युवाओं को विविधता से परिपूर्ण ज्ञान देने का काम किया है। प्रदर्शनी के शुभारंभ अवसर पर प्रदेश कार्य समिति सदस्य राजेंद्र पांडे, राजेंद्र त्रिपाठी, योगेंद्र शुक्ला, राजगोपाल चारी, विवेक गौतम, शिवम द्विवेदी, शिवेंद्र शुक्ला, गौरव पांडे, संजीव शुक्ला, स्थानीय पार्षद उपस्थित रहे। स्वागत भाषण प्रदर्शनी के संचालक आनंदपाल ने दिया। कार्यक्रम का संचालन आशीष तिवारी ने किया। वहीं प्रदर्शनी संचालक टीम के दीपक सिंह मेहता, साक्षी सैनी, संतोष पवार, साक्षी रावत, आकृति शुक्ला, आयुष नेमा ने सहभागिता निभाई। सांसद ने राजकुमार शर्मा, प्रदर्शनी के संचालक आनंदपाल, स्नेह लता त्रिपाठी, आशीष तिवारी का सम्मान किया।

यह प्रदर्शनी कई प्रमुख संगठनों का प्रदर्शन कर रही है, जिनमें केंद्रीय भंडारण निगम, नाबार्ड , ट्राइफेड, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ,डीसी हस्तशिल्प, कृषि बीमा, लघु उद्योग विकास बैंक, खादी और ग्रामोद्योग आयोग , राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति वित्त और विकास निगम, कृषि महाविद्यालय, कृषि विभाग, मध्य प्रदेश , ए.वी.एन.एल., भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, अमूल, टी बोर्ड, भारतीय मानक ब्यूरो, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, सिक्किम बांस मिशन, वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र , डाक विभाग , भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण, विदेश व्यापार महानिदेशालय, केंद्रीय पोल्ट्री विकास संगठन, केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद, मध्य प्रदेश राज्य जैव विविधता बोर्ड, भारतीय रिजर्व बैंक, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद , भारतीय स्टेट बैंक , पादप किस्मों और किसान अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, जल शक्ति मंत्रालय , उद्यान एवं रोपण फसल निदेशक,चेपॉक, चेन्नई, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन संस्थान, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया शामिल हैं। ये संस्थाएँ समाज में अपने महत्वपूर्ण योगदान के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सामूहिक रूप से काम कर रही हैं। आज 29 जनवरी को दोपहर प्रदर्शनी स्थल पर प्रसिद्ध कलाकार रघुवीर शरण श्रीवास्तव.बघेली लोकगायिका सुषमा शुक्ला वर्तिका शुक्ला शिबू द्विवेदी एवं साथियों द्वारा लोकगीतों की प्रस्तुति दी जाएगी।

उप मुख्यमंत्री ने भटलो ग्राम में मगरदहा घाट का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने अपने भ्रमण के दौरान भटलो ग्राम में मगरदहा घाट का निरीक्षण किया। उन्होंने घाट को साफ-सुथरा कराकर इसके सौन्दर्यीकरण किये जाने के निर्देश दिये। उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी नेशनल रूरल इम्पायमेंट गारंटी एक्ट के तहत विधायकनिधि, डीएमएफ तथा मनरेगा के सहयोग से वर्ष 2022 में घाट का निर्माण किया गया था। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों की जल संरचनाओं को संरक्षित व संबंधित किये जाने की जरूरत है। इस घाट में पर्याप्त जल की उपलब्धता रहती है इसे साफ सुथरा कर इसके सौन्दर्यीकरण किये जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि ग्रामवासी भी परिसम्पत्तियों को अपना माने तथा शासन प्रशासन के साथ सहयोग की भावना रखकर ग्रामीण विकास के कार्यों में अपनी भागीदारी निभायें और अपने जिले व प्रदेश को उन्नति के शिखर तक ले जाने में सहयोगी बनें।

प्राण प्रतिष्ठा एवं श्रीमद भागवत कथा में शामिल हुए उप मुख्यमंत्री

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल बेलवा बड़गैयन ग्राम में नवनिर्मित बूढ़ी माता मंदिर परिसर में देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा एवं श्रीमद भागवत कथा में शामिल हुए। शुक्ल ने धार्मिक अनुष्ठान में हवन पूजन किया तथा भगवान के दर्शन कर प्रदेश की सुख समृद्धि की कामना की। उन्होंने भण्डारे में प्रसाद भी ग्रहण किया। शुक्ल ने भव्य मंदिर निर्माण के लिये फणीन्द्र शुक्ल व उनके परिजनों को साधुवाद देते हुए शुभकामनाएँ प्रेषित की।

मद्य निषेध संकल्प दिवस 30 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि पर 30 जनवरी को मद्य निषेध संकल्प दिवस का आयोजन किया जायेगा। समाज में बढ़ते हुए मद्यपान तथा नशीली दवा, मादक पदार्थ/ द्रव्यों के सेवन से होने वाले दुष्परिणामों से युवाओं, विद्यार्थियों एवं समाज को अवगत कराने, नशा छोड़ने के लिऐ प्रेरित कर उन्हें मादक द्रव्य पान, गुटका, तम्बाकू सिगरेट, मदिरा पान त्यागने हेतु संकल्प दिलाने तथा संकल्प लेने वालों से संकल्प पत्र भरवाने का कार्य इस दिवस पर किया जायेगा। नशा प्रवृत्ति की रोकथाम हेतु जनजागृति एवं जन चेतना का निर्माण किया जाना इसका मुख्य उद्देश्य है। भारत सरकार, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा नशामुक्त भारत अभियान प्रारंभ किया गया है जिसमें नशीली दवाओं की मांग में कमी लाने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों को सम्मिलित किया गया है। इसके तहत उपचार व परामर्श तथा जनजागृति संबंधी कार्य किये जायेंगे ताकि लोग नशामुक्ति की ओर प्रेरित हो सके। इसी क्रम में विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, जिला पंचायत, जनपद पंचायत, ग्राम पंचायत, स्थानीय निकाय तथा स्वैच्छिक संस्थाओं की सहभागिता सुनिश्चित की जायेगी। मद्य निषेध संकल्प दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी जी की जयंती पर व्याख्यान, वेबीनार, आदि कार्यक्रम आयोजित कराने, नशामुक्ति के लिये जनजागृति हेतु रैली, नुक्कड़ नाटकों का मंचन कराने, स्थानीय विद्यालयों में नशामुक्ति विषयंक प्रतियोगिताएं, प्रश्न मंच का आयोजन कराने तथा ग्राम सभाओं में नशामुक्त ग्राम बनाने संबंधी प्रस्ताव पारित कराया जायेगा।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।